भोजपुरी वीर काव्य

रचयिता—

प्रसिद्धनारायण सिंह

प्रकाशक—

अन्तर्राष्ट्रीय प्रकाशन मंडल

नया टोला, पटना—४

प्रकाशिका :—
रामकुमारी देवी
अध्यक्षा :—
अन्तर्राष्ट्रीय प्रकाशन मंडल
पटना—४

प्रथमबार : १९५५ ई०

मूल्य २)

मुद्रक—
हिन्दी साहित्य प्रेस
इलाहाबाद

भूमिका

'बलिदानी बलिया' के लेखक, बाबू प्रसिद्ध नारायण सिंह ने अपनी इस कृति में प्राचीन काल से सन् १९४२ तक बलिया के बलिदान की कहानी अङ्कित की है। इसकी भाषा भोजपुरी है। भोजपुरी पूर्वी अथवा मागधी परिवार की सबसे पश्चिमी बोली है। ग्रियर्सन ने पश्चिमी मागधी को बिहारी के नाम से अभिहित किया है। बिहारी ग्रियर्सन का उस एक भाषा से तात्पर्य है जिसकी मगही, मैथिली तथा भोजपुरी तीन बोलियाँ हैं। बिहार की तीनों बोलियों में विस्तार-क्षेत्र की दृष्टि से भोजपुरी का स्थान सर्वोच्च है। उत्तर में हिमालय की तराई से लेकर दक्षिण में मध्यप्रदेश के सरगुजा तक इस बोली का विस्तार है। बिहार प्रदेश के शाहाबाद, सारन, चम्पारन, राँची, जशपुर, पालामऊ के कुछ भाग तथा मुजफ्फरपुर के उत्तरी-पश्चिमी कोने में इस बोली के बोलने वाले निवास करते हैं। इसी प्रकार उत्तर प्रदेश के बनारस, गाजीपुर, बलिया, जौनपुर के अधिकांश भाग, मिर्जापुर, गोरखपुर, आज़मगढ़ तथा बस्ती ज़िले की हरैया तहसील में स्थित कुवानो नदी तक भोजपुरी भाषा-भाषियों का आधिपत्य है। यह ४३ हजार वर्ग मील के क्षेत्र में बोली जाती है तथा इसके बोलने वालों की संख्या तीन करोड़ से अधिक है।

भोजपुरी सजीव भाषा है। यद्यपि भोजपुरी क्षेत्र में प्रारम्भिक तथा माध्यमिक शिक्षा का माध्यम हिन्दी है तथापि अपनी मातृभाषा के प्रति भोजपुरियों के हृदय में अगाध प्रेम है। जहाँ अध्यापक तथा छात्र, दोनों, भोजपुरी होते हैं वहाँ कठिन शब्दों की व्याख्या तथा अर्थ आदि समझाने के लिए अध्यापक प्रायः भोजपुरी का ही प्रयोग करते हैं। इसी प्रकार गणित के प्रश्नों तथा ज्यामिति के अभ्यासों को आपस में समझाते हुए छात्र गण प्रायः अपनी मातृभाषा ही बोलते हैं। कक्षाओं के भीतर तथा बाहर विद्यार्थी आपस में बात करते हुए भोजपुरी का ही व्यवहार करते हैं।

भूमिका

'बलिदानी बलिया' के लेखक, बाबू प्रसिद्ध नारायण सिंह ने अपनी इस कृति में प्राचीन काल से सन् १९४२ तक बलिया के बलिदान की कहानी अङ्कित की है। इसकी भाषा भोजपुरी है। भोजपुरी पूर्वी अथवा मागधी परिवार की सबसे पश्चिमी बोली है। ग्रियर्सन ने पश्चिमी मागधी को बिहारी के नाम से अभिहित किया है। बिहारी ग्रियर्सन का उस एक भाषा से तात्पर्य है जिसकी मगही, मैथिली तथा भोजपुरी तीन बोलियाँ हैं। बिहार की तीनों बोलियों में विस्तार-क्षेत्र की दृष्टि से भोजपुरी का स्थान सर्वोच्च है। उत्तर में हिमालय की तराई से लेकर दक्षिण में मध्यप्रदेश के सरगुजा तक इस बोली का विस्तार है। बिहार प्रदेश के शाहाबाद, सारन, चम्पारन, राँची, जशपुर, पालामऊ के कुछ भाग तथा मुजफ्फरपुर के उत्तरी-पश्चिमी कोने में इस बोली के बोलने वाले निवास करते हैं। इसी प्रकार उत्तर प्रदेश के बनारस, गाजीपुर, बलिया, जौनपुर के अधिकांश भाग, मिर्जापुर, गोरखपुर, आज़मगढ़ तथा बस्ती ज़िले की हरैया तहसील में स्थित कुवानो नदी तक भोजपुरी भाषा-भाषियों का आधिपत्य है। यह ४३ हजार वर्ग मील के क्षेत्र में बोली जाती है तथा इसके बोलने वालों की संख्या तीन करोड़ से अधिक है।

भोजपुरी सजीव भाषा है। यद्यपि भोजपुरी क्षेत्र में प्रारम्भिक तथा माध्यमिक शिक्षा का माध्यम हिन्दी है तथापि अपनी मातृभाषा के प्रति भोजपुरियों के हृदय में अगाध प्रेम है। जहाँ अध्यापक तथा छात्र, दोनों, भोजपुरी होते हैं वहाँ कठिन शब्दों की व्याख्या तथा अर्थ आदि समझाने के लिए अध्यापक प्रायः भोजपुरी का ही प्रयोग करते हैं। इसी प्रकार गणित के प्रश्नों तथा ज्यामिति के अभ्यासों को आपस में समझाते हुए छात्र गण प्रायः अपनी मातृभाषा ही बोलते हैं। कक्षाओं के भीतर तथा बाहर विद्यार्थी आपस में बात करते हुए भोजपुरी का ही व्यवहार करते हैं।

संस्कृत के प्राचीन पण्डित तो पाठशालाओं में व्याकरण पढ़ाते समय अपने छात्रों को संस्कृत अथवा भोजपुरी में ही समझाते हैं। गाँवों में यदि कोई व्यक्ति अपने लोगों से भोजपुरी के अतिरिक्त हिन्दी-उर्दू में बातचीत करता है तो वह उपहास का पात्र बन जाता है। भोजपुरी का लोक-साहित्य अत्यधिक समृद्ध है।

राष्ट्रपिता गाँधी जी द्वारा प्रवर्तित असहयोग आन्दोलन के पूर्व तथा उस युग में, जनता को जागृत करने के लिए भोजपुरी में अनेक कविताएँ लिखी गईं थीं जिनमें 'बटोहिया', 'फिरँगिया' आदि प्रसिद्ध हैं; किन्तु इधर स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद, जन-जागरण के साथ-साथ साहित्य रचना के लिए भोजपुरी का उपयोग विशेष रूप से होने लगा है। गत तीन वर्षों से आरा (बिहार) से मासिक 'भोजपुरी' का नियमित रूप से प्रकाशन हो रहा है और हाल में कई प्रतिभा सम्पन्न कवियों ने भोजपुरी को अपनी सुन्दर रचनाओं से अलंकृत किया है। बाबू प्रसिद्ध नारायण सिंह कृत 'बलिदानी बलिया' भी इन्हीं रचनाओं में से है। इसकी भाषा साहित्यिक भोजपुरी है, किन्तु इसमें भोजपुरी मुहावरों तथा उसके मिठास भरे ठेठ शब्दों का मणि-काञ्चन योग भी उपस्थित किया गया है।

छात्र जीवन से ही बाबू प्रसिद्ध नारायण सिंह की प्रवृत्ति साहित्यिक रही है। आप की प्रथम कृति 'बलिया जिले के कवि और लेखक' नामक पुस्तक है जिसमें आपने अपने जिले के कवियों और लेखकों की कृतियों का सुन्दर परिचय दिया है। आप बलिया कचहरी में मुख्तारी कर रहे थे कि गाँधी जी का सत्याग्रह आन्दोलन छिड़ा। सन् १९३० से १९४२ तक के आन्दोलनों में बाबू प्रसिद्ध नारायण सिंह ने विशेष भाग लिया। इसके परिणाम स्वरूप आपको कठिन कारावास का दण्ड भी भुगतना पड़ा। इस समय आप मुख्तारी के साथ-साथ बलिया में सार्वजनिक कार्य भी कर रहे हैं। सन् १९४२ के भयानक विद्रोह के पश्चात् निरंकुश ब्रिटिश शासन की ओर से बलिया की जनता पर जो अत्याचार हुए वह भारतीय स्वतन्त्रता के इतिहास में एक असाधारण घटना है। बाबू प्रसिद्ध नारायण

सिंह इस घटना-चक्र जनित यातनाओं से स्वयं आक्रान्त हो चुके हैं और इनकी उन्हें पूर्ण अनुभूति भी है। यही कारण है कि उस समय बलिया के गाँव-गाँव में क्रान्ति की जो लहर दौड़ गई थी उसका सजीव चित्रण आप ने 'बलिदानी बलिया' में किया है। मैं आप की इस ओज-पूर्ण कृति का हृदय से अभिनन्दन करता हूँ। मुझे पूर्ण आशा है कि यह जनता में समादृत होगी।

हिन्दी विभाग,
प्रयाग विश्वविद्यालय, प्रयाग
कार्तिक पूर्णिमा, संवत् २०११।

उदयनारायण तिवारी

सिंह इस घटना-चक्र जनित यातनाओं से स्वयं आक्रान्त हो चुके हैं और इनकी उन्हें पूर्ण अनुभूति भी है। यही कारण है कि उस समय बलिया के गाँव-गाँव में क्रान्ति की जो लहर दौड़ गई थी उसका सजीव चित्रण आप ने 'बलिदानी बलिया' में किया है। मैं आप की इस ओज-पूर्ण कृति का हृदय से अभिनन्दन करता हूँ। मुझे पूर्ण आशा है कि यह जनता में समादृत होगी।

हिन्दी विभाग,
प्रयाग विश्वविद्यालय, प्रयाग
कार्तिक पूर्णिमा, संवत् २०११। } उदयनारायण तिवारी

परिचय

मातृभूमि के लाल जब माता के दूध का मूल्य चुकाने चलते हैं, उस समय बलिदान की अनुपम घड़ियाँ आती हैं। 'बलिदानी बलिया' के कवि का काव्य-द्रव्य उसी काल के अन्तराल से आया है। हमारा स्वातन्त्र्य-संग्राम देश-व्यापी था, परन्तु उसका निर्णयकारी युद्ध बलिया की भूमि पर जम कर हुआ था। सन् १९४२ की अगस्त क्रान्ति में एक ओर अस्त्र शस्त्रों से सुसज्जित अंग्रेज़ सरकार का प्रहार, और दूसरी ओर अहिंसा का व्रत लेकर देश पर मर मिटने वाली जनता का मरण-ज्वार—समर भूमि बलिदान की लपटों से चमक उठी थी। उन बलिदानों की चिता राख से मसिहानी ले कवि ने बलिदानियों की बोली (भोजपुरी) में अपनी लेखनी को अभिमंत्रित किया है:—

चलु चिताराख-मसिहानी ले
दुखिया नयनन के पानी ले
लिखि दे बागिन का बोली में
बागिन का क्रान्ति-कहानी के

मानव जीवन में वर्तमान उसका सबसे महान सत्य होता है; परन्तु इस वर्तमान के मन में भूतकाल के लिए गम्भीर मोह और भविष्यत् के लिए चंचल लोभ सदा द्वन्द्व मचाये रहते हैं। इसी कारण कवि जब वर्तमान का चित्रण करने चला तो इतिहास की वेदना बोल उठी, मेरा भी चित्र उतार दो, और भविष्यत् ने संकोच से कहा, मेरी छवि भी काढ़ दो। इन चित्रों में रूप भी है, प्राण भी है।

दानी अशोक सम्राट रहल
पाऽटलीपुत्र के ठाट रहल

भारत के मुकुट 'अशोक चक्र'
अगुआ अशोक के लाट रहल

× × ×

भोजपुर तप्पा तइयार चलल
घर घर से झारेझार चलल
बाँका सेनानी कुँवरसिंह
घोड़ा ऊपर असवार चलल

और १८ अगस्त १९४२ को बैरिया थाने पर राष्ट्रीय झंडा गाड़ते समय—

जस छूटत तीर शरासन से
जस टूटत नखत अकाशन से
तस पलकन में 'कौशलकुमार'
उड़ि ऊपर चलल कहाँ सनसे

× × ×

चलनी शरीर के खाल भइलि
सभ देहि रगाइ गुलाल भइलि
बहियाँ दूनो झंडा ले ले
फूलल परास के डाल भइलि,

इस कवि को यह गौरव प्राप्त है कि वह कर्म की पुकार पर राजनीति के मैदान में लड़ने गया था, और छापा मार लड़ाई के समय अनेक अज्ञात स्थानों पर साहित्य के शरण-कुञ्ज में वाणी के शब्द बेधी बाणों को रेतता रहा। इसीलिये अगस्त क्रान्ति के चित्रण में राजनीति और साहित्य दोनों का सत्य विराजमान है।

चुहचुहिया बोललि भोर भइल
सुकवा उगि गइल अँजोर भइल

चहचह चिरइनि का चहकनि से
धरती अम्बर ले शोर भइल

× × ×

कुचलल किसान ककुआइ चलल
मसलल मजूर मँडराइ चलल
बलिया का कोना कोना से
किकुरल जवान तरनाइ चलल

× × ×

झन झन लोहे के द्वार खुलल
जेहल के बन्द किवार खुलल
ताला पर ताला में जकड़ल
भारत के भाग-लिलार खुलल

बलिया में अगस्त-क्रान्ति राज्य सत्ता की चोटी पर चढ़ गई थी। जनता ने सरकार का तार तार काट डाला। रेल की पटरियाँ उखाड़ फेंकी। एक स्थान पर देखा कि तार के खंभों को उखाड़ते समय, सदियों के अपमानित किसान खंभे की गरदन में लोहे की जंजीर फँसा कर खींचते थे और प्रत्येक झटके पर गाते थे—

१ 'काली माई २ हो सहाई
३ धीरे धीरे ४ मार गम्भीरे'

इस प्रकार रेल तार के कुल खंभे उखाड़ फेंके गये। स्टेशन जला दिये गये, उनकी पक्की छतें तोड़ फोड़ दी गईं। डाकघरों की भी यही दशा हुई। पक्की सड़कें स्थान-स्थान पर खोद डाली गईं। किनारे के पेड़ अधिक संख्या में काट कर सड़कों पर सुला दिये गये। गंगा में तैरता हुआ सरकारी स्टीमर 'हरमश' ध्वस्त कर दिया गया। अपार जन समूह थानों पर उमड़ पड़ा; सरकारी सिपाहियों के होश उड़ गये। वे बन्दूक, संगीन, वर्दी-पेटी सब छोड़ कर प्राण भिक्षा माँगते हुए भाग खड़े हुए, यद्यपि जनता अपना

प्राण देने चली थी—उनका प्राण लेने नहीं। हिंसा की तलवार अहिंसा के काते कच्चे सूत से भी कमज़ोर साबित हुई।

अब विद्रोही जनता ज़िले की तहसीलों पर अधिकार करने के लिए आगे बढ़ी। बाँसडीह तहसील पर आक्रमण किया गया। वहाँ के तहसील-दार और संतरियों ने आत्म समर्पण कर दिया। जन समूह ने तहसील के दफ्तर में आग लगा दी। रजिस्ट्री के आफ़िस की भी वही दशा हुई। सरकारी ख़जाने पर व्यवस्थित रूप से अधिकार किया गया। लूट होते हुए भी वह लूट नहीं थी। ख़ज़ाने के रुपये में से सरकारी सिपाहियों और कर्मचारियों को ६ माह की पेशगी तनख़ाह दे दी गई।

दूसरे दिन लगभग एक लाख के जनसमूह ने बलिया नगर पर घेरा डाला। कलक्टर और पुलिस कप्तान ने देखा कि अब कलक्टरी और सरकारी ख़ज़ाना किसी प्रकार नहीं बच सकते। उन्होंने तत्काल ख़ज़ाने के १८ लाख रुपये के नोट स्वयं जलवा डाले। यह ख़बर लगते ही जनता ललकार बाँधकर जेल, कलक्टरी और ख़ज़ाने की ओर झपटी। इस अभियान को देखकर सिपाहियों के हाथ से हथियार गिरने लगे। इस प्रकार सम्पूर्ण राज सत्ता पर अधिकार कर लिया गया। विशाल जन समूह स्वराज्य स्थापना के लिये विधान सम्मेलन करने टाउन हाल की ओर चला। स्थापना हुई। संध्या हो रही थी। बेचारे सरकारी अधिकारी भाग निकले और रात्रि के अन्धकार में छिप गये।

विधाता उस स्वराज्य सरकार को अधिक दिनों तक देख न सका। सप्ताह लगते लगते, अंग्रेज़ी फ़ौज में अंग्रेज़, बलूची, पठान तथा सिख सैनिक आ गये। सबसे बिगड़े हुए मिलिटरी पुलिस और प्रतिहिंसा के भाव से भरे हुए स्थानीय पुलिस के सिपाही थे। ज़िले पर वे टूट पड़े। रास्ते में जिसको जहाँ देखा, गोली का शिकार बनाया। अंग्रेजी दमन चक्र तेज़ी से चला। बलिया की जनता ने बड़ी धीरता से उन दुर्दिनों का सामना किया।

नर कवन न रन के शूर रहल
घर कवन न चकनाचूर रहल
अस गाँव कवन, अस ठाँव कवन
रन घेरा से जे दूर रहल

भोजपुर प्रदेश वीरता, करुणा और भाग्य के व्यंग का क्षेत्र रहा है। भोजपुरी में भी करुण तथा वीर रस की ही प्रधानता है। इसके सोहर, जतसार, पयार, लहरा, चहका, झूमर, बिरहा, खिलौना, बरवै, निर्गुन, चैता, घाँटो, कड़खा और आल्हा छन्दों में काव्य का विपुल वैभव लोक गीत के रूप में उपलब्ध है। अचरज की बात है कि सोहर के मंगल-गान में भी शिशु के जन्म दिन युद्ध का गीत गाया जाता है।

'एक ओरि लअड़ेले राजा बाबू एक ओरि पतिसाह लअड़े हो
ए ललना, एक ओरिआ लअड़े दुसमानवा—
त एक ओरि मोरे बाबुल लअड़े हो'

इसी भोजपुरी के एक बाबुल को चुनकर देश ने आज अपना प्रथम राष्ट्रपति बनाया है। वीरता और बलिदान इस प्रदेश के कण कण में व्याप्त है। 'बलिदानी बलिया' इन्हीं बलिदानों की माला है। इस पर मेरी श्रद्धा है। मूल्यांकन तो काव्य के जौहरी करेंगे।

राम सिंहासन सहाय 'मधुर'

सूची



माननीय हरगोविन्द सिंह

प्रेम भेंट

मानगीय श्री हरगोविन्द सिंह
शिक्षा मंत्री, उत्तर प्रदेश
के
कर-कमलन में

बन्धुवर,

जिन शूर शहीदन का तप से
धरती पर उतरल सरग-द्वार
बलिया-बलिवेदी से ऊषा
उगि चललि सजा के विजय-थार
उन वीरन का बलिदानन के
'बलिदानी बलिया' गुथल हार
रउरा के उहे समर्पित बा
रन-मयदानन में पलल प्यार

प्रसिद्धनारायण सिंह

कलम से

हर गाँव समर-मयदान जहाँ
कन-कन बा लहूलुहान जहाँ
उतरलि ऊषा जयमाला ले
भारत में भइल बिहान जहाँ

तहवाँ के पुरुष-परानी के
गँवई के राजा-रानी के
रे कलम ! अमर बनि जो लिखि के
इतिहास अमर-बलिदानी के

चलु चिता-राख-मसिहानी ले
दुखिया-नयन के पानी ले
लिखि दे बागिन का बोली में
बागिन के क्रान्ति-कहानी के

शहीद के समाधि

लुटा दिहल परान जे
मिटा दिहल निशान जे
चढ़ा के शीश देश के
बना दिहल महान जे

जने-जने जगा गइल
नया नशा पिया गइल
जरा जरा शरीर के
स्वदेश जगमगा गइल

पहाड़ तोड़ि तोड़ि के
नदी के धारि मोड़ि के
सुघर डहरि बना गइल
जे काँट-कूस कोड़ि के

समर-बिगुल बजा गइल
ब्रिटेऽन के झुका गइल
पताल से अकाश ले
धजा के जे उड़ा गइल

अमर-समर में सो गइल
कलङ्क-पङ्क धो गइल
लहू का बूँद बूँद में
विजय के बीज बो गइल

ऊ बीज मुसुकरा उठल
पनपि के गहगहा उठल
विनाश का विकास में
बसंत लहलहा उठल

कली-कली फुला गइलि
गली-गली सुहा गइलि
'शहीद के समाधि' पर
'स्वतन्त्रता' लुभा गइलि

सरग-नदी उतरि चललि
नई लहरि लहरि चललि
उषा आजाद हिन्द में
अकाश से पसरि चललि

सखे ! सुमन सँवारि ले
सनेह-दीप बारि ले
'शहीद के समाधि,' के
तू आरती उतारि ले

पुरान बखान

बचपन में जब संसार रहल
कतहीं-कतहीं घर-बार रहल
धरती माता का आँगन में
बन, परबत, नदी, पठार रहल

हर ओर कली मुसुकाति रहलि
घमघोर लता लहराति रहलि
बन-कुँज-लता-फल-फूलन के
मुँह चूमि हवा हहराति रहलि

चुपचाप सुतल इतिहास रहल
बन-बन बनचर के बास रहल
तब बालमीकि-रामायन के
बलिया से उठल प्रकाश रहल

भृगमुनि के जहाँ कुटीर रहलि
ऋषियन, मुनियन के भीर रहलि
बिटुराति सभा भृगुआश्रम में
ददरी में संगम-तीर रहलि

धरती पर सरग समान रहलि
झिलमिल तारन में जान रहलि
ई 'धर्मारण्य' सरोवर पर
जप में, तप में परधान रहलि

पुरान बखान

बचपन में जब संसार रहल
कतहीं-कतहीं घर-बार रहल
धरती माता का आँगन में
बन, परबत, नदी, पठार रहल

हर ओर कली मुसुकाति रहलि
घमघोर लता लहराति रहलि
बन-कुँज-लता-फल-फूलन के
मुँह चूमि हवा हहराति रहलि

चुपचाप सुतल इतिहास रहल
बन-बन बनचर के बास रहल
तब बालमीकि-रामायन के
बलिया से उठल प्रकाश रहल

भृगमुनि के जहाँ कुटीर रहलि
ऋषियन,मुनियन के भीर रहलि
बिटुराति सभा भृगुआश्रम में
ददरी में संगम-तीर रहलि

धरती पर सरग समान रहलि
झिलमिल तारन में जान रहलि
ई 'धर्मारण्य' सरोवर पर
जप में, तप में परधान रहलि

जहँ सब के पूरा साध भइल
कटि कोटि-कोटि अपराध गइल
जपि 'मरा मरा' के मंत्र जहाँ
तरि 'बालमीकि' अस व्याध गइल

बलि राजा के रजधानी ई
युग युग के अमर-कहानी ई
जग भर में जिनके जोति जगलि
उनके जगमगलि निशानी ई

रतिरानी के रनिवास जहाँ
सुरपुर के सुघर निवास जहाँ
'रतिसंड'[1] नगर में, बोलत बा
अबले पुरान-इतिहास जहाँ

बलिया का पच्छिम कोना में
कारों के कुञ्ज सलोना में
जहँ कामदेव के बास रहल
कमलन से सजल घिरोना में

जब काम समर मयदान चलल
कर में ले कुसुम कमान चलल
महिमंडल से नभ मंडल ले
फुफुकारत पाँचो बान चलल

रँगि गइल जगत रस-रंगनि में
अस डूबल काम-तरंगनि में
लख चवरासी के जोईनि में
बिरले बचि गइल उमंगनि में

---

१. रतसड़

तब काम चली बलखात चलल
शंकर ऊपर अटिलात चलल
रितुपति, परियनि के सेना ले
रन-गद में माति घधात चलल

कारों के कमल-कुटी भीतर
शिव के तब खुलल नयन तीसर
सगरी सेना ले कामदेव
जरि छार भइल, बनि गइल अमर

फिनु शंकर के बरदान मिलल
बिनु देह इहां अस्थान मिलल
जग में 'अनंग' अस नाम भइल
सभ देवन में सनमान मिलल

सुरसरि-सरजू का संगम पर
कुश-कातर-काँस मड़इय्या तर
रचि वेद-भाष्य मुनि 'वेद व्यास'
करि गइलनि 'व्यास-स्थान'[1] अमर

विद्या के रहल अगार जहाँ
सभ शिष्य रहल संसार जहाँ
ओयना में गड़ल 'अनालय' बा
बटु रहलनि चारि हजार जहाँ

कुटिया जहँ रहलि पराशर के
बन बीच निवास चराचर के
बतलावत गाँव 'परसिया' बा
पद-चिन्ह महान मुनीश्वर के

---

१. बाँसथाना

ई परशुराम अवतारी के
जननी योगी ब्रतधारी के
जग जोहत छिपल छितौनी में
पग-धूरि बाल ब्रह्मचारी के

बन में सीता के बास जहाँ
लव, कुश के जन्म निवास जहाँ
रावन विजयी राघव सेना
रन भीतर भइलि विनाश जहाँ

लव-कुश लइकन के तीर चलल
रन से भगि सगरे बीर चलल
त्यागल सीता का कुटिया में
बेबश अधीर रघुबीर चलल

सीता के सत जगमगा उठल
धरती-अकास डगमगा उठल
रन में सूतल जे बीर रहल
निँदिया से जनु बगबगा उठल

कपि भालु सभे अगराइ चलल
जग-जननी के शिर नाइ जलल
सभ 'सीता कुण्ड'[1] सरोवर के
धरती में अमर बनाइ चलल

१. सीताकुंड

कन-कन बिजुली भंडार जहाँ
कन-कन शोला अंगार जहाँ
कन-कन में चुनि चुनि सानल बा
बागी बीरन के प्यार जहाँ

जन जन गुन कहत जबानी बा
नवयुग के अमिट निशानी बा
सोने का अच्छरि में ढारलि
बलिया के क्रान्ति-कहानी बा

कन-कन बिजुली भंडार जहाँ
कन-कन शोला अंगार जहाँ
कन-कन में चुनि चुनि सानल बा
बागी वीरन के प्यार जहाँ

जन जन गुन कहत जबानी बा
नवयुग के अमिट निशानी बा
सोने का अच्छरि में ढारलि
बलिया के क्रान्ति-कहानी बा

भोजपुर तप्पा

पच्छिम परिछत काशी कपार
पूरब चूमत आधा बिहार
महि-मुकुट हिमालय उत्तर में
जेकरा दक्खिन बिन्ध्या पटार

भोजपुर तप्पा के बीर भूमि
उत्तर भारत के हृदय चूमि
गंगा-सरजू का आँचर पर
फइलति धरती पर रूमि झूमि

जहवाँ प्रानी दिल खोलि-खोलि
हर बाति सुधा में घोलि-घोलि
मन मोहि-मोहि सभ के ले ऽ लनि
भोजपुरिया - बोली बोलि - बोलि

युग-युग का उड़न खटोला पर
जन-जन जब चढ़ल हिँडोला पर
जब भेष, भाव, भाषा सभ के
बदललि हर टोला-टोला पर

दुनिया जब डावाँडोल रहलि
भोजपुर-धरती अनमोल रहलि
आपन सुभाव-बोली-बानी
अपने दुनिया में गोल रहलि

धरती के सिर-सिन्दूर रहलि
छलिया दुनिया से दूर रहलि
छकि-छकि के प्रेम-पियाला के
अपने मस्ती में चूर रहलि

परबत के छाती फारि फारि
नदियनि के धप धप धवल-धारि
लिपि-लिपि जाली जेकर आँगन
अपना छाती के दूध गारि

जेकरा धूरी में लोटि लोटि
जन बिहरत बाड़नि तीनि कोटि
अगुआन बनल बल विद्या में
जन-जन जेकर पइयाँ पलोटि

मधुरी भोजपुरिया बानी में
सभ के भाषा-पटरानी में
तुलसी, रैदास, कबीर जहाँ
कविता कइलनि कइलानी में

सुर, संत, महंत, फकीरन के
अवतार जहाँ बर बीरन के
हर गाँवन में, हर ठाँवन में
अबले बा चिन्ह कुटीरन के

गुरु 'गोरखनाथ' महान जहाँ
अवतरल 'बुद्ध' भगवान जहाँ
'भीखा', 'गुलाल' जहँ 'शिवाराम'
'धरनी', 'हरलाल' 'सुजान' जहाँ

मुनि 'महाबीर' अस संत जहाँ,
'शिवनारायण' गुनवंत जहाँ
'नवनिधि', विद्यापति', 'रामचन्द्र'
कवि, कोविद भइल अनंत जहाँ

जहँ भोऽजपूर रजधानी में
कन-कन धरती बलिदानी में
बिखरल बा बीरन के गाथा
खँड़हर के ढ़ह निसानी में

आपन जेकर इतिहास अमर
आपन जेकर बिसवास अमर
आचार अमर, व्यवहार अमर
आपन धरती आकाश अमर

जहँ दानी राजा भोज रहल
सरवर में खिलल सरोज रहल
विद्वानन का दरबारन में
दिन-दिन विद्या के खोज रहल

अस बीर भोजपुर तप्पा पर
बलिदानी बागी जत्था पर
बलिहारी भारत माता बा
कन-कन पर चप्पा-चप्पा पर

झाँकी

मुँह चम्पारन के चूमि-चूमि
सारन-सीमा पर झूमि-झूमि
आजमगढ़ से गाजीपुर ले
बलिया के बाटे बीर भूमि

गंगा का उरबर पेटी में
सरजू का धूसर रेती में
तमसा, मँगई, लकड़ा नाला-
का बलिया बसल तरेटी में

गंगा के सुघर कछारन पर
सरजू के कटत किनारन पर
दिन राति मनुज-मेला होला
दूनों के तीर अरारन पर

दूनों द्वाबा का द्वारन पर
बलिया के प्रेम-दुलारन पर
लहराति लिपटि मिलि जाति जहाँ
सुनसान सिताब दियारन पर

ई जिला प्रान्त में छोट बनल
सभ का आँखिन का ओट बनल
उत्तरप्रदेश के पूरब के
बरियार बहादुर कोट बनल

लखनेसर, खैराडीहन तर
गढ़ पक्का कोट समूहन तर
इतिहास पुरान लुकाइल बा
ओयना, अर्मांव का दूहन तर

सुन्दर सुरहा के सुघर ताल
चुनि-चुनि पुरइनि पत्ता विशाल
कमलन के फूलन से सँवारि
दिहलसि सतरङ्गी सेज डाल

लहराला जहवाँ खिलल धान
मस्ती में झूमेला किसान
जल बीच जहाँ जलकुम्भी पर
चिरइनि के होला मधुर गान

चुलबुल कटहर नाला चंचल
सावन-भादो में उछल-उछल
सुरसरि-जल से भरि-भरि देला
सुरहा-सर के खाली अंचल

नदियनि के तीर, दियारन में
धूसर बलुआह कछारन में
मखमल अस गुलगुल सेज बिछलि
अधखिलल फसलि का हारन में

बहुरङ्गी बूटा-बेलिनि में
लहलह लत्तर अलबेलिनि में
लगि जाले आँखि जहाँ जाले
नट-नागर का नित खेलनि में

हर मास इहाँ मधुमास बनल
रितुरानी के रनिवास बनल
घर-आँगन में, बन बागन में
सुर-मुनि-संतन के बास बनल

मड़ई में, टाट पलानी में
गवईं के छप्पर छानी में
अनमोल अतिथि सतकार जहाँ
हर खेतन में खरिहानी में

उछलत उमङ्ग हर बस्ती में
मरभूखन का अलमस्ती में
कन-कन में बीज बगावत के
जन-जन बा मातल मस्ती में

रन-दुन्दुभी

जब जब जग में रन रारि भइलि
बर बीरन बीच गुहारि गइलि
भोजपुरिया बीर जुवानन के
तब-तब सेना तइयारि भइलि

जब कुरुक्षेत्र का कोरा में
भारत के युद्ध-झकोरा में
जग भर के सेना खींचि चललि
रन-सागर बीच हिलोरा में

काशी-सेना ललकार चललि
जब 'धर्मराज' का द्वार चललि
बलिबेदी पर भोजपुरियन के
आगे तब बीर कतार चललि

भारत के सूरुज अस्त भइल
स्वाहा बल बीर समस्त भइल
महाभारत में जब भारत के
सगरे पुरुषारथ पस्त भइल

सदियन लेसूतल साल गइलि
दमरी दोकरा नरपाल भइल
घर-घर का घोर लड़ाई में
नर-नर सगरे कंकाल भइल

बँटि बिखरि हिन्द-सम्राज गइल
ढुलमुल राजन के राज भइल
दस दिशि बरसाती घासन अस
बिनु रूख रेंड़ सिरताज भइल

पतझड़ जनु हिन्द झकोरि चलल
पातन-पातन के झोरि चलल
बन, बारिन, बाग-बगइचन के
झहरा झहरा झकझोरि चलल

तब प्रकृति नटी अठिलाति चललि
हर डालिन में मुसुकाति चललि
नाटक के परदा बदल गइल
धरती सगरी हरियाति चललि

रितुपति टूसन का पोरन पर
उतरल तब फूल कटोरन पर
बन बीच जवानी जागि चललि
मस्ती छा गइलि टिकोरन पर

शासन में मौर्य्य नरेशन के
झुकि शीश गइल सभ देशन के
जन-जन मस्ती में झूमि चलल
जनु आइल अंत कलेशन के

दानी अशोक सम्राट भइल
'पाटलीऽपुत्र' के ठाट भइल
भारत के मुकुट 'अशोक चक्र'
अगुआ अशोक के लाट भइल

वरबीर बिकरमादीत रहल
जग में गूँजल जयगीत रहल
नव रतनन का दरबारन में
नित, काव्य, कला, संगीत रहल

कवि कालिदास विद्वान रहल
सभ भारत के अभिमान रहल,
'विक्रम सम्बत' के जन्म जहाँ
भोजपुर प्रदेश के शान रहल

भोजपुर प्रदेश शिरमौर रहल
भुइँ बीच न जोड़ा और रहल
केशरिया झंडा का नीचे
देशन - देशन के ठौर रहल

बढ़ि चढ़ि यूनी के चान भइल
अस भारत के उत्थान भइल
तब राहु इहाँ जयचन्द चलल
उलटा मानो भगवान भइल

'ग़ोरी' का पास सनेस गइल
रे दैव ! न मन में ठेस भइल
अपनी करनी से यवनन का
चरनन में सगरे देश गइल

ग़ज़नी, ग़ोरी, अफग़ानन के
ईरानी, तुरुक, पठानन के
खिलजी, सय्यद, तुग़लक, लोदी
सम्राज. बनल सुल्तानन के

रन-दुन्दुभी

जब जब जग में रन रारि भइलि
बर बीरन बीच गुहारि गइलि
भोजपुरिया बीर जवानन के
तब-तब सेना तइयारि भइलि

जब कुरुक्षेत्र का कोरा में
भारत के युद्ध-झकोरा में
जग भर के सेना खींचि चललि
रन-सागर बीच हिलोरा में

काशी-सेना ललकार चललि
जब 'धर्मराज' का द्वार चललि
बलिबेदी पर भोजपुरियन के
आगे तब बीर कतार चललि

भारत के सूरुज अस्त भइल
स्वाहा बल बीर समस्त भइल
महाभारत में जब भारत के
सगरे पुरुषारथ पस्त भइल

सदियन लेसूतल साल गइलि
दमरी दोकरा नरपाल भइल
घर-घर का घोर लड़ाई में
नर-नर सगरे कंकाल भइल

बँटि बिखरि हिन्द-सम्राज गइल
ढुलमुल राजन के राज भइल
दस दिशि बरसाती घासन अस
बिनु रूख रेंड़ सिरताज भइल

पतझड़ जनु हिन्द झकोरि चलल
पातन-पातन के झोरि चलल
बन, बारिन, बाग-बगइचन के
झहरा झहरा झकझोरि चलल

तब प्रकृति नटी अठिलाति चललि
हर डालिन में मुसुकाति चललि
नाटक के परदा बदल गइल
धरती सगरी हरियाति चललि

रितुपति टूसन का पोरन पर
उतरल तब फूल कटोरन पर
बन बीच जवानी जागि चललि
मस्ती छा गइलि टिकोरन पर

शासन में मौर्य्य नरेशन के
झुकि शीश गइल सभ देशन के
जन-जन मस्ती में झूमि चलल
जनु आइल अंत कलेशन के

दानी अशोक सम्राट भइल
'पाटलीऽपुत्र' के ठाट भइल
भारत के मुकुट 'अशोक चक्र'
अगुआ अशोक के लाट भइल

बँटि बिखरि हिन्द-सम्राज गइल
ढुलमुल राजन के राज भइल
दस दिशि बरसाती घासन अस
बिनु रूख रेंड़ सिरताज भइल

पतझड़ जनु हिन्द झकोरि चलल
पातन-पातन के झोरि चलल
बन, बारिन, बाग-बगइचन के
झहरा झहरा झकझोरि चलल

तब प्रकृति नटी अठिलाति चललि
हर डालिन में मुसुकाति चललि
नाटक के परदा बदल गइल
धरती सगरी हरियाति चललि

रितुपति टूसन का पोरन पर
उतरल तब फूल कटोरन पर
बन बीच जवानी जागि चललि
मस्ती छा गइलि टिकोरन पर

शासन में मौर्य्य नरेशन के
झुकि शीश गइल सभ देशन के
जन-जन मस्ती में झूमि चलल
जनु आइल अंत कलेशन के

दानी अशोक सम्राट भइल
'पाटलीऽपुत्र' के ठाट भइल
भारत के मुकुट 'अशोक चक्र'
अगुआ अशोक के लाट भइल

वरबीर बिकरमादीत रहल
जग में गूँजल जयगीत रहल
नव रतनन का दरबारन में
नित, काव्य, कला, संगीत रहल

कवि कालिदास विद्वान रहल
सभ भारत के अभिमान रहल,
'विक्रम सम्वत' के जन्म जहाँ
भोजपुर प्रदेश के शान रहल

भोजपुर प्रदेश शिरमौर रहल
भुइँ बीच न जोड़ा और रहल
केशरिया झंडा का नीचे
देशन - देशन के ठौर रहल

बढ़ि चढ़ि यूनी के चान भइल
अस भारत के उत्थान भइल
तब राहु इहाँ जयचन्द चलल
उलटा मानो भगवान भइल

'गोरी' का पास सनेस गइल
रे दैव ! न मन में ठेस भइल
अपनी करनी से यवनन का
चरनन में सगरे देश गइल

गज़नी, ग़ोरी, अफग़ानन के
ईरानी, तुरुक, पठानन के
खिलजी, सय्यद, तुग़लक, लोदी
सम्राज. बनल सुल्तानन के

पूरब, पच्छिम, दक्खिन, उत्तर
सगरे भारत का सीमा पर
मुसलिम झंडा फहराइ चलल
वन, सागर, खोह, पहाड़न पर

राजन का राज-निवासन पर
जरजर भारत का आसन पर
फिनु भइल मुगल बदशाहन के
सम्राज सुघर सिंहासन पर

कल-बलछल के अस जोर भइल
भरि भारत के हर ओर गइल
बरबस बेबस जन-जन घर-घर
बनि मुसलिम कई करोर गइल

रोजा, रमजान, अजान चलल
मुल्ला, मसजीद, कुरान चलल
तिरिया, तनया के डोला दे
दरबारन में सनमान चलल

दिल्ली से दूर अलोता में
बलिया तब अपना खोंता में
चहकति अलगे अलमस्त रहलि
उछलत गंगा के गोता में

आहुति डाले के बेरा में
बयरी-दल का रन घेरा में
बलिया आगे अगुआन रहलि
हर दम, हर छन, हर फेरा में

जब मऊ बीच तकरारि भइलि
गइयनि के त्राहि पुकारि भइलि
अतताइन के करतूतनि के
बलिया ले गऊ गोहारि गइलि

सगरी बलिया ललकारि चललि
छप से जब छापा मारि चललि
पहरन का घोर लड़ाई में
यवनन के टोली हारि चललि

रवि यवनन के आकाश चढ़ल
हर कोना ताप-प्रकाश बढ़ल
ढलि आप चलल तिजहरिया में
बनि नाश पतन के फाँस चलल

फिनु अस आपस में रारि भइलि
कोना-कोना में हारि भइलि
लन्दन के नीच फिरंगिन के
भारत भीतर पइसारि भइलि

नौकर-शाही का पाँवन तर
जब काँपि उठल हर गाँव नगर
तब बागी बीर जवानन के
दल दउरि चलल बलि-बेदी पर

फिनु क्रान्ति-नदी का धारा पर
असमय, भगवान सहारा पर
भारत के बोझलि नाव चललि
अनजान, अबूह किनारा पर

घनघोर घटा अन्हियार रहल
टूटत अररात अरार रहल
फँसि के अनजोह चकोहन में
पेनी में फटल दरार रहल

आन्हीं आइलि, झकझोरि चललि
जब लहरि लबालब बोरि चललि
बागी बलिया पतवार उठा
ले नाव किनारा ओरि चललि

बलिया रन में हुंकार चललि
गोहुअन अइसन फुफुकार चललि
हर गाँवन से, हर गलियनि से
नर-नारी झारे झार चललि

बागी बलिया का आँगन में
जगि गइल जोश जब जन-जन में
इठलात इगारह लाख चलल
उमड़ल उमंग तन में, मन में

रन में बलिया निरभीक चललि
बनि के बागिन के लीक चललि
बापू के 'सत्य' अहिंसा' के
मानों साकार प्रतीक चललि

उत गन मशीन घहराति चललि
हर हर गोली हहराति चललि
इत बान्हि कफन रन में आगे
बागी बलिया बलखाति चललि

बनि रनचंडी विकराल गइलि
धरती लोहू से लाल भइलि
बलिबेदी पर दे शीश भेंट
बलिया रन बीच निहाल भइलि

लंदन का चुनल चुनौती पर
बलिया कसि क्रान्ति-कसौटी पर
चमकलि अस बीच बयालिस में
अपना अनमोल बपौती पर

आजादी के मुसुकान भइल
धरती आपन असमान भइल
विजयी बलिया का आँगन में
भारत के सुघर-बिहान भइल

विद्रोह

जब सनतावनि के रारि भइलि
बीरन के बीर-पुकारि भइलि
बलिया के 'मंगल पांडे' के
बलिबेदी से ललकारि भइलि

मंगल मस्ती में चूर चलल
बाँका बागी मशहूर चलल
जनु 'चक्रव्यूह' का घेरा में
अभिमन्यु बघेला शूर चलल

परवाह न शत्रु हजारन के
गोली गोला बउछारन के
तन-मन में एगो चाह रहलि
भारत के भार उतारन के

छप छप गोरन के काटि चलल
रनभूमि रकत से पाटि चलल
जे जहें मिलल, ते तहें मुअल
शासन के सोरि उपाटि चलल

सगरी सेना के चीर चलल
फाटक पर बागी बीर चलल
तब ले दल दउरि फिरंगिन के
फिरकी अस नाचि अधीर चलल

पगली घंटी घनघना उठलि
गोरी पलटनि दनदना उठलि
घिरि 'मंगल' गइल घिरौना में
तरुवारि किरिचि खनखना उठलि

निरभय 'मंगल' मुसुकात चलल
बयरी-दल में इठलात चलल
फाँसी के फंदा चूमि चमकि
तन मन दे सरग छछात चलल

जब चिता-राख-चिनगारी से
धुधुकत तनिकी अंगारी से
बरि गइलि लहरि, धधकलि, फइललि
बलिया के क्रान्ति पुजारी से

घर-घर में अइसनि आगि लगलि
भारत के सूतलि भागि जगलि
अँगरेजन के पलटनि सगरे
बैरक-बैरक से भागि 'चललि

बिगड़लि बागी 'पलटनि काली'
जब चललि ठोंकि आगे ताली
मचि गइलि रारि, करिआइ गइलि
गोरन के गालन के लाली

भोजपुर तप्पा तइयार चलल
घर-घर से झारे झार चलल
बाँका सेनानी कुँवरसिंह
घोड़ा ऊपर असवार चलल

टोली चढ़ि चलति जवानन के
मद में मातल मरदानन के
भरि गइलि हादुर बागिन से
कोना-कोना मयदानन के

आइसनि सेना बलिदानी ले
मद में मातल तूफानी ले
आइल रन में रिपु का आगे
जब कुँवर सिंह सेनानी ले

खच-खच खंजर, तरुआरि, चललि
संगीन, कृपान, कटारि चललि
बर्छा, बर्छी का बरषा से
बहि लाल लहू के धारि चललि

बन्दूकि दगलि दन दनन दनन
गोली दउरलि सन सनन सनन
भाला, बल्लम, तेगा, तब्बर
बजि उठल उहाँ खन खनन खनन

खउलल जब खून किसानन के
जागल जब जोश जवानन के
छक्का छूटल अँगरेजन का
बड़का बड़का कपतानन के

बागी सेना ललकारि चललि
पटना दिल्ली ले भारि चललि
आगे जे परल पतिंगा अस
उनके रन में संहार चललि

टोली चढ़ि चललि जवानन के
मद में मातल मरदानन के
भरि गइलि हादुर बागिन से
कोना-कोना मयदानन के

'अइसनि सेना बलिदानी ले
मद में मातल तूफानी ले
आइल रन में रिपु का आगे
जब कुँवर सिंह सेनानी ले

खच-खच खंजर, तरुआरि, चललि
संगीन, कृपान, कटारि चललि
बर्छा, बर्छी का बरषा से
बहि लाल लहू के धारि चललि

बन्दूकि दगलि दन दनन दनन
गोली दउरलि सन सनन सनन
भाला, बल्लम, तेगा, तब्बर
बजि उठल उहाँ खन खनन खनन

खउलल जब खून किसानन के
जागल जब जोश जवानन के
छक्का छूटल अँगरेजन का
बड़का बड़का कपतानन के

बागी सेना ललकारि चललि
पटना दिल्ली ले झारि चललि
आगे जे परल पतिंगा अस
उनके रन में संहार चललि

बयरी के धीरज छूटि गइलि
जनु घड़ा पाप के फूटि गइल
रन से सभ सेना भागि चललि
हर ओर मोरचा टूटि गइल

तनिकी सा दूर' किनार रहल
भारत के बेड़ा पार रहल
लउकत खूनी दरियाव पार
मंजिल के छोर हमार रहल

नइया तेजी से तीर चललि
सभ भवँर भयंकर चीर चललि
तब ले 'जयचंद-बिभीषन' के
चुपके-चुपके शमशीर चललि

अपना भाई से चूक भइलि
नइया दरकलि दुइ टूक भइलि
कसकेला अब ले घाव गहिर
अइसन छाती में हूक भइलि

फिनु भारी अतिआचार भइलि
धरती, धन के संहार भइल
हर गाँव-नगर, हर नारी-नर
गोरन के खुलल शिकार भइल

गोरा गोँयड़ में जूटि-जूटि
गाँवन-गाँवन पर टूटि-टूटि
टोलन-टोलन के फूँकि-फूँकि
सगरी धन,दउलति लूटि-लूटि

घर-घर जन-जन के मार-मारि
छप्पर, खप्पर दिहलनि उजारि
बचन के भाला भोंकि-भोंकि
सतियनि के लिहलनि सत उतारि

दे दे के फाँसी बीन-बीन
सभ के लिहलनि हथियार छीन
फँसि के जयचन्दी-जालनि में
बनि गइल बीर भारत अधीन

हिलि गइल हिन्द के ओर छोर
अस जुलुम-जोर के भइल शोर
खोरिनि - खोरिनि में खूनन के
बहि चलल नदी अइसन हिलोर

कागद में लिखलि कहानी बा
अबहीं ले याद जबानी बा
भारत का कोना - कोना में
कन-कन में पड़लि निशानी बा

घर-घर जन-जन के मारि-मारि
छप्पर, खप्पर दिहलनि उजारि
बचन के भाला भोंकि-भोंकि
सतियनि के लिहलनि सत उतारि

दे दे के फाँसी चीन-चीन
सभ के लिहलनि हथियार छीन
फँसि के जयचन्दी-जालनि में
बनि गइल वीर भारत अधीन

हिलि गइल हिन्द के ओर छोर
अस जुलुम-जोर के भइल शोर
खोरिनि - खोरिनि में खूनन के
बहि चलल नदी अइसन हिलोर

कागद में लिखलि कहानी बा
अबहीं ले याद जवानी बा
भारत का कोना - कोना में
कन-कन में पड़लि निशानी बा

कांग्रेस-संगठन

पनपल बिरवा कुम्हिलाइ गइल
घर-घर में मातम छाइ गइल
पिँजड़ा के पंछी सिह बनल
मन के अरमान भुलाइ गइल

फिनु कई साल ले बीत चलल
चुप गरमी, बरषा, शीत चलल
दुरदिन, मनहूस उदासी मेँ
बनि बयरी आपन मीत चलल

अस देश थाक के चूर भइल
सगरे बल-पौरुष दूर गइल
जे राउ रहल ऊ रंक बनल
सुख-सपना चकनाचूर भइल

बन्दिनि माँ जब बेहाल भइलि
कन-कन के दीन मुहाल भइलि
बम्बे में साल पचासी में
कांग्रेऽस देश के ढाल भइलि

सेनानी के बीगुल बाजल
फिनु हिन्द-देश सूतल जागल
छिड़ि गइल जंग आजादी के
दल भइल जवानन के पागल

जब 'लोक मान्य' के जेल भइल
छव साल मांडले-सेल भइल
सन् बारह में बलिवेदी पर
बीरन के ठेलम - ठेल भइल

'बन्दे मातरम' तराना पर
बीरन का बागी बाना पर
नौकर शाही जब भड़कि उठलि
सभ छात्रन का रन-गाना पर

तब आगि लगलि तृन-ढेरी में
रन-राग बजलि रन-भेरी में
बलिया भर में बिजुली दउरलि
छात्रन का डेरा-डेरी में

बनि चारि छात्र अगुआन चलल
मुरदन में फूँकत प्रान चलल
चहुँ दिशि में चारु चाक नियर
चक्कर दे बान समान चलल

जगि जिला चलल जम्हुआई से
अजगुत आलस अँगड़ाई से
नौकरशाही तब टूटि पड़लि
सभ छात्रन पर बरियाई से

तब ले जर्मन रन-शूर चलल
मस्ती में मद में चूर चलल
यूरप के धरती डोलि उठलि
रन में 'कैसर' मशहूर चलल

रन अइसन घोर जुझार भइल
लन्दन में हाहाकार भइल
जर्मन-तोपन का गर्जन में
जन-जन जूझल, लाचार भइल

बापू का पास गुहारि गइलि
लंदन से त्राहि पुकारि भइलि
तब आजादी का वादा पर
नेता-टोली तइयारि भइलि

लाखन युवकन के जूह चलल
मस्ती में राह अबूह चलल
गाँधी का एक इशारा पर
भारत के बीर समूह चलल

बीरन के सेना पार गइलि
रन बीच जबे ललकार गइलि
भारत के बीर जवानन से
जर्मन के सेना हार गइलि

जइसे लंदन के जीति भइलि
आइलि आफति जब बीति गइलि
तब शेर बनलि भीजलि बिलारि
चट बदलि प्रीति के रीति गइलि

बदला में 'रौलट एक्ट' मिलल
भारत के कन-कन काँपि उठल
जब 'जलियाँ वाला-बाग' बीच
दन-दन गोली, गोला दउरल

तब आजादी के रेलि चललि
भारत में आगि उँड़ेलि चललि
आँन्ही, तूफान, बवंडर के
तेजी में चीरि ढकेलि चललि

बिजुली बनि जाने कहाँ गइलि
छन इहाँ गइलि, छन उहाँ गइलि
हैरान भइलि नोकरशाही
ऊ काल बनलि जब जहाँ गइलि

सेनानी हाँकत जात रहल
मंजिल के छोर दिखात रहल,
'ए साल हिन्द आजाद भइल'
कानन में गूँज सुनात रहल

इकईस साल तरनाइ चलल
दल बयरनि के दहलाइ चलल
भारत का कोना - कोना में
अस प्रलय-पवन लहराइ चलल

शाशन के सोरि हिलाइ चलल
इक कोटि सदस्य बनाइ चलल
चट 'तिलक-फंड' में सवा कोटि
रुपया पन रोपि जुटाइ चलल

रनभेरी के रन-गान भइल
भारत के मस्त जवान भइल
इसकूल, कचहरी, छोडि-छोडि
सभ के रन बीच पयान भइल

तन-मन-धन आपन भूलि चलल
हँसि हँसि फाँसी पर झूलि चलल
मद-मस्त जवान जवानी दे
जननी के ले पग धूलि चलल

कारा के बेड़ी काटि चलल
जननी-दुख-दारुन बाँटि चलल
अपना लोहू से सींचि-सींचि
बलिबेदी सगरे पाटि चलल

बागी बलिया इठलाति चललि
रन-आँगन में मुसुकाति चललि
दल बागिन में सभ का आगे
युवकन के बीर जमाति चललि

भारत भर के भरि जेल चलल
गोली-गोला बनि खेल चलल
रनचंडी का रन मंदिर में
भारत के बीर बघेल चलल

दुइ जहाँ जेल जब जात रहल
चट चारि उहाँ मँडरात रहल
पुलिसन के दल पकड़त पीटत
थकि-थकि छकि-छकि घबरात रहल

जब समर भयंकर घोर रहल
छू चलल छितिज के छोर रहल
नोकरशाही के सूरुज जब
ढरकत अस्ताचल ओर रहल

हर ओर आगि लहराति रहलि
जब रनचंडी अगराति रहलि
ललकी चुनरी में ऊषा जब
ले विजय हार मुसुकाति रहलि

तूफान-मेल जब जाति रहलि
झर-झर, हर-हर, हहराति रहलि
हड़-हड़, धड़-धड़ जब सरर-सरर
भक भक, झक झक झहराति रहलि

आन्ही, तूफान, बवंडर के
जब चीर चललि गिरि-कंदर के
अचके में अस आदेश मिलल
करुना-सागर प्रलयंकर के

सहसा गाड़ी झकझोरि रुकलि
आगिल-पाछिल सब झोरि रुकलि
हर कड़ी-कड़ी छितिराइ गइलि
डब्बन के मोरि मरोरि रुकलि

युवकन के जोश-उबाल भइल
पल में भारी भूचाल भइल
चौरी-चौरी के थाना जब
लथपथ लोहू से लाल भइल

सेनानी के अहवान भइल
रुकि तुरत समर घमसान गइल
पूनो का राति सुहावनि में
फँसि राहु-फाँस में चान गइल

नमक सत्याग्रह

नइया जलबीच अथाह रहलि
जब बन्द अगाड़ी राह रहलि
फिनु ऊब चूब में प्रान परल
बापू का ओर निगाह रहलि

दुइ चरन देश का बीच चलल
नर-नारिनि के दल खीँच चलल
मुरुझाइल बाग, बगइचन के
अस प्रेम-सुधा से सीँच चलल

छन में निराश के नाश भइल
जनु सूरुज उगल, प्रकाश भइल
भारत का कोना - कोना में
कन-कन में नया हुलास भइल

बलियो के ऊ सनमान मिलल
बलिवेदी से बरदान मिलल
बागी बलिया के बासिन के
घर ही बइठल भगवान मिलल

बलिया निज भागि बखाँनि चललि
स्वागत में सीना तानि चललि
घर-घर नर - नर नारी - नारी
दल बल आगे अगुआनि चललि

खिलि गइलि जिला के कली-कली
जग गइलि जिला के गली-गली
जन जन बलिया में दउरि चलल
अइसन सन-सन फइललि बिजुली

जब जमा अमीर गरीब भइल
जवराइ जिला के बीर गइल
भोजन-छाजनि के - के पूछे
दुरलभ कुइयाँ के नीर भइल

जब बापू के व्याख्यान भइल
बलिबेदी पर अहवान भइल
बलिया के बच्चा-बच्चा ले
तइयार भइल, अगुआन भइल

मुखमंडल से मुसुकान झरल
बर बोली में बलिदान भरल
बापू का अंगन - अंगन से
जर्जर भारत के प्रान झरल

बलिया बरडोली - टोली में
उतरलि बापू का बोली में
तब जोश-लहर लहराइ चललि
लोगन का टोली - टोली में

बलिया दुख आपन भूलि गइलि
पद, पदवी पाके फूलि गइलि
आजादी का बलिबेदी पर
मुअला, मिटला पर तूलि गइलि

फिनु रनभेरी रन बीच बजाल
सत्याग्रहियन के सेन सजलि
पगलाइल मस्त फतिंगन के
जनु फउदि दीप पर लूभ्कि चललि

शाही सेना झकझोर चललि
दउरल 'दांडी' का ओर चलल
गाँधी सेना सैलानी ले
बनि निमन नमक के चोर चलल

'धरसाना' का मयदानन पर
फरफर फहरात निशानन तर
छिड़ि गइलि युद्धि आजादी के
सरकारी नून - खजानन पर

उन्नासी चुनल जवान चलल
आगे बापू अगुआन चलल
भारत का कोना-कोना से
बीरन के जोश-उफान चलल

गाँधी अस नर-नाहर पागल
सुनि भइल हिन्द घर-घर पागल
कुटिया पागलि, मठिया पागल
छप्पर पागल, खप्पर पागल

परिजन पागल, पुरजन पागल
हरिजन पागल, हर जन पागल
बच्चा - बच्ची, बूढ़ा - बूढ़ी
नारी - नारी, नर - नर पागल

फिनु रनभेरी रन बीच बजाल
सत्याग्रहियन के सेन सजलि
पगलाइल मस्त फतिगन के
जनु फउदि दीप पर लूझि चललि

शाही सेना झकझोर चललि
दउरल 'दांडी' का ओर चलल
गाँधी सेना सैलानी ले
बनि निमन नमक के चोर चलल

'धरसाना' का मयदानन पर
फरफर फहरात निशानन तर
छिड़ि गइलि युद्धि आजादी के
सरकारी नून - खजानन पर

उन्नासी चुनल जवान चलल
आगे बापू अगुआन चलल
भारत का कोना-कोना से
बीरन के जोश-उफान चलल

गाँधी अस नर-नाहर पागल
सुनि भइल हिन्द घर-घर पागल
कुटिया पागलि, मठिया पागल
छप्पर पागल, खप्पर पागल

परिजन पागल, पुरजन पागल
हरिजन पागल, हर जन पागल
बच्चा - बच्ची, बूढ़ा - बूढ़ी
नारी - नारी, नर - नर पागल

पागल मजूर, पागल किसान
पागल हिन्दू, पागल पठान
सिख, द्रविड़, इसाई, मूसाई
पागल युवती, पागल जवान

पगलन के टोली दउरि चललि
हर गाँव नगर से जउरि चललि
सागर से नून बटोरे के
गोली - बरषा में बउरि चललि

हर डगर डगर में नून बनल
हर नगर-नगर में नून-बनल
गाँवन का गलियन-गलियन में
सबहर घर-घर में नून बनल

पगलन का अगहुर पाँतिन में
बागिन का बीर जमातिन में
बलिया बलिबेदी बीच गइलि
बलि बनि बापू का बातिन में

अस पयदा इहाँ उमंग भइल
कानून, नून के भंग भइल
हथियारन बीच निहत्थन के
अजगुत अनहोना जंग भइल

चर्खा के चालू तार भइल
खद्दर के खुलल प्रचार भइल
'मञ्चेस्टर' 'लंकाशायर' के
बाजार बन्द बेकार भइल

लहराइलि लहरि सुदेशी के
अस होली जललि बिदेशी के
उखड़लि तूफान, बवंडर से
जड़ जमलि इहाँ परदेशी के

रन बीच मोरचा घोर भइल
लंदन ले भारी शोर भइल
अस मचलि भयंकर काटि मारि
अकुलाइ छितिज के छोर गइल

पाजी पुलिसन के गोल चलल
मनमानी धावा बोल चलल
रन - सागर में जनु ज्वार उठल
धरती ऊपर भूडोल चलल

जब यमदूतन के कार चललि
सँग में ले ले हथियार चललि
बलखात काल के गालन में
बागी सेना तइयार चललि

काशी कइसन, काबा कइसन
बनि गइल तीर्थ कारा जइसन
जब्ती, लाठी, गोली, गाली,
बनि गइलि बड़प्पन के फैशन

केसरिया बाना पहिन-पहिन
अइली माँ, बेटी, बीर बहिन
रन में लुटि लाखन लाल गइल
लुटि गइल बहादुर 'रामदहिन'*

जब सत्याग्रह के जोर भइल
पटि भारत का हर ओर गइल
घबराइ गइलि नौकरशाही
बेकार दमन घनघोर भइल

'इरविन' के सब अरमान चूर
भइ गइल शान, अभिमान चूर
बन्दिन के कारागार चूर
हथियार चूर, फरमान चूर

ढहि चुकल जुलुम के सब पहाड़
नहि रुकल हिन्द के जब दहाड़
इरविन गाँधी का पास चलल
बलिदानन से खा के पछाड़

इरविन गाँधी के मेल भइल
सरकार झुकलि, खुल जेल गइल
लंदन में बइटल 'गोलमेज'
कतनन के उहाँ झमेल भइल

---

*पं० रामदहिन ओझा बाँसडीह बासी बलिया के एगो रत्न रहलन। १७-२-३१ के सन्ध्या समय जेल के अधिकारी उनके अब तब जानि के श्री राधामोहन सिंह का दरवाजा छोड़ि गइलनि। १८-२-३१ का सबेरे उनके सरगबास हो गइल। सगरी बलिया रो पड़लि।

काउंसिल चुनाव

इरविन के बतिया भूलि गइल
लंदन के कलई खुलि गइलि
गान्धी के फिनु जब जेल भइल
सगरी आशा मिलि धूलि गइलि

तारा गिनि-गिनि भिनुसार भइल
चुप राति चललि, उजियार भइल
लंदन का बड़की काउंसिल में
'इण्डिया-ऐक्ट' तइयार भइल

फिनु सूतल भारत जागि चलल
मुँह से जनु उगलित आगि चलल
ललकारत नोकरशाही के
काउंसिल चुनाव में लागि चलल

हिन्दू, मुसलिम, क्रस्तान चलल
जब ले-ले ऊंच निशान चलल
बनि 'पोलिंग' तीर्थ महान गइल
पूजा ले-ले जजमान चलल

सब कांऽगरेस के वोट पड़ल
नोकरशाही पर चोट पड़ल
बड़का-बड़का बाबू राजा
कँगरेसी-जन से छोट पड़ल

अपना घर आपन राज भइल
जनता का सिर पर ताज धइल
लंदन नगरी में जानि पड़ल
जनु लादल डूबि जहाज गइल

जरजर जन-जन में जीव पड़ल
इतिहास नया के नींव पड़ल
धनिकन का रोस अँगारन में
जइसे धधकाइल घीव पड़ल

फिनु गद्दारन में राइ भइलि
पापी - टोली बिटुराइ गइलि
नोकरशाही का साया में
जनु घोर घटा मँड़राइ गइलि

हिन्दू मुसलिम पर वार भइल
गुंडन के अतिआचार भइल
दंगा बलवा से भारत के
कोना-कोना लाचार भइल

तब ले फिनु से छिड़ि जंग गइल
रस-रंगन में पड़ि भंग गइल
निरबल जरजर - जर्मन जागल
सभ लोग अचानक दंग भइल

देखत-देखत 'पोलैंड' खतम
'बेल्जियम' वीर 'हालैंड' खतम
बलवान बहादुर 'फ्रांस' खतम
बलकानी सगरे राज खतम

'इटली' 'जर्मन' 'जापान' चलल
रन बीच रूस बलवान चलल
लंदन ले दन-दन तोप दगलि
'हिटलर' जब कालसमान चलल

'चर्चिल' के बाजी हारि गइलि
घर - घर से त्राहि पुकार भइलि
बरजोरी भारत के सेना
तब सागर पार उतारि गइलि

सुनि के नेतन का खार भइल
फिनु 'असहयोग' तइयार भइल
मचि गइलि रारि आजादी के
शासन-सिंहासन भार भइल

सभ काउंसिल-कुर्सी छोडि. चलल
जेहल से नाता जोडि. चलल
अस भइल 'व्यक्तिगत सत्याग्रह'
जनु चूहा परबत फोडि. चलल

व्यक्तिगत-सत्याग्रह

यूरप में आगि फफाति रहलि
रन बीच फिरंगी जाति रहलि
जब हाहाकार - हिंडोला पर
दुनिया डूबति उतराति रहलि

जन-जन के जान जवाल रहल
जब एक-एक के काल रहल
सभ राज - ताज महराजन के
पल बीच काल के गाल रहल

तब मचलि इहाँ अस रारि रहलि
सगरी सेना लाचारि रहलि
बंदूकि-किरिचि - भाला ले-ले
भकुआइलि पुलिस कतारि रहलि

अनहोना समर जुझार रहल
अचरज से सभ संसार रहल
पन्ना पुरान इतिहासन के
चुपचाप मौन लाचार रहल

सेगाँव-संत अगुआन रहल
जन-जन जे पर बलिदान रहल
भारत-सागर में ज्वार उठल
लहरल जनु जोश-उफान रहल

अस सेना चुनलि अपार चललि
कफनी ले-ले तइयार चललि
बलिबेदी बीच अहिंसा के
मूरति मानों साकार चललि

पहिले परवाना भेजि चललि
रिपु दल के आप सहेजि चललि
दीपक पर फउदि फतिंगन के
बिछवाइ मौत के सेजि चललि

बलिया के आगे पाँति चललि
अस रन-मस्ती में मात चललि
रहि गइलि दंग नोकरशाही
जब आगे युवक-जमाति चललि

भरि गइल जेल मरदानन से
मचलल मजदूर - किसानन से
भरि गइल बनारस बन्दी-घर
बलिया के बीर जवानन से

जब लाठी, जब्ती जेलनि से
गोलन, गोलिन से सेलनि से
बागिन के बढ़ते जोश गइल
फाँसी से, खूनी खेलनि से

लंदन - शाही घबराइ गइलि
पकड़त, पीटत थहराइ गइलि
'सेगाँव - संत' का कुटिया में
मनमारि, हारि, पछताइ गइलि

चट चतुर 'क्रिप्स' नटराज चलल
लंदन में ले छल - साज चलल
दिल्ली नगरी में भारत के
नेतन के चुनल समाज चलल

छन में छल-छद्म भुलाइ गइल
मुँह ऊपर मातम छाइ गइल
गाँधी अस चतुर खिलाड़ी से
जब मात मदारी खाइ गइल

तब 'क्रिप्स' लवटि लाचार गइल
उलुटा सीधा परचार भइल
दुखिया भारत का घर-घर में
फिनु से घनघोर अन्हार भइल

अगस्त आन्दोलन

सगरे भारत बेहोश रहल
जब सुतल जवानी-जोश रहल
चुम्बन में चरन फिरंगिन के
बड़भागि रहलि, संतोष रहल

तब आठ अगस्त महान चलल
दुखिया भारत के शान चलल
सिर बान्हि कफन बलिबेदी पर
जननी के चुनल जवान चलल

नेतन के बीर जमाव भइल
'भारत छोड़ो' प्रस्ताव भइल
छन भीतर आनन फानन में
सभ बदलि देश के भाव गइल

बम्बऽई नगर अगुआन भइल
रन में पहिले बलिदान भइल
जहाँ महासमिति का बइठक से
सभ के रन बीच पयान भइल

हलचल में आठ अगस्त गइल
चुप चान गगन में अस्त भइल
जब शयन-शिविर में नेता सभ
कर्चानिंदियाँ ले-ले मस्त भइल

तब नव अगस्त अनमोल चलल
लंदन के खोलत पोल चलल
हथियार साथ ले लारी में
अगिनित पुलिसन के गोल चलल

हर शिविर शिविर के घेरि चलल
नेता-नेता के टेरि चलल
बन-कुंजन बीच अहेरी जनु
खोजत हर ओर अहेरि चलल

दल नेतन के इठलात चलल
बंदी घर में मुसुकात चलल
भिनुसार भइल, सजि स्वागत में
रवि लाल लपकि मुसुकात चलल

पुलिसन के अगिनित कार चललि
चुपचाप क्षितिज का पार चललि
घर-घर चुनि-चुनि नेतन के ले
जाने कब कहाँ सिधार चललि

गइलनि नेता कब कौन कहाँ ?
दउरल ढूँढ़ल सभ इहाँ, उहाँ
गाली, गोली, डंडा, लाठी
पावल पूछल जे जहाँ-जहाँ

अफवाह उड़ल नर-नारिनि में
नगरन में, हाट-बजारिनि में
गाँवन - गाँवन, टोलन - टोलन
गलियनि में, महल-अटारिनि में

जेतना मुँह ओतने बाति रहलि
बेबस जनता घबराति रहलि
आवति, धावति, भागति, पराति
पूछति, बूझति, अकुलाति रहलि

केहू देखल सभ जेल गइल
कारा में सासति - सेल भइल
केहू देखल फाँसी ऊपर
सभ मस्त मौत से खेल गइल

गोरन के जारी जोर भइल
भरि भारत में मचि शोर गइल
गाँवन का गलियनि-गलियनि में
घर - घर उतपात करोर भइल

आजादी के अहवान भइल
सदियन से शोणित-दान भइल
रन-मंदिर का बलिवेदी पर
चुनि-चुनि अगिनित बलिदान भइल

नरमेध - यज्ञ का ज्वाला में
बलिदानी कुंड निराला में
आहुति पर आहुति दिहल गइल
रन चंडी का रन - शाला में

'सुखदेव', 'राजगुरु', 'दास', 'बोस',
योगी 'यतीन्द्र', 'ताँतिया', 'घोष',
'परफुल्ल' 'कन्हाई', 'मदन' बीर
'बिसमिल' 'असफाकउल्ला' 'भरोस'

'आजाद', 'भगत', 'ऊधम' अमोल
'करतार', 'सेन', 'मंगल', अडोल
जहँ 'शाह बहादुर', 'कुँवर सिंह'
खूनन के दिहलनि तोल-तोल

देवी 'मैना' बलिदान भइलि
माँ 'बा', 'कमला' कुरबान भइलि
'लक्ष्मी बाई', 'रानी स्वरूप',
बलिबेदी पर अगुआनि भइलि

जहँ 'तिलक', 'लाजपति', शेरबबर
'मोती', 'पटेल', 'गोखले' अमर
'अरविन्द', 'देसाई', 'नौरोजी'
बलि भइल अनेकन नारी-नर

अस लहरि जहाँ लहराति रहलि
नभ-मंडल ले मँड़राति रहलि
खूनी सन बीच बयालिस में
भारत भीतर धुधुकाति रहलि

अमरी के अमर-एलान भइल
आगी में घी के दान भइल
भारत का कोना-कोना में
शोला धधकल, तूफान भइल

भीतर बरूदि के ढेरि रहलि
बस चिनगारी के देरि रहलि
अमरी-एलान का फायर से
बरि गइलि आगि, गढ़ घेरि चललि

जन-जन में खून-उबाल भइल
तन, मन में जोश-उछाल भइल
अगुअन के जेहल में सुनि के
सभ लोग रोस से लाल भइल

हर गाँव जवार-पथार चलल
हर धनी, गरीब, गँवार चलल
हर टोल चलल, हर नोल चलल
घर-घर सबहर सरदार चलल

गाँधी के जीति मनाइ चलल
आपन झंडा फहराइ चलल
नंगा - भूखा जब लाखन गो
घर-घर से कड़रवा गाइ चललि

उड़ि गरद धूरि आकाश चललि
धरती जनु रवि का पास चललि
आन्ही, तूफान, बवंडर ले
जनु प्रकृति-परी बधवास चललि

रन में जब बागी गोल चलल
ललकारत मारू ढोल चलल
नोकरशाही का शूरन के
तब कवल-करेजा डोल चलल

भारत के नगर-नगर जागल
भारत के डगर - डगर जागल
कुटिया, कोठी, मँड़ई, टाटी
नारी - नारी, नर - नर जागल

मुसलिम, हिन्दू, हरिजन जागल
हर ओर धनी, निरधन जागल
सिख, द्रविड़, इसाई, कोल, भील
जेने तेने जन-जन जागल

युग-युग तपसी त्यागी बलिया
बनबासी, बैरागी बलिया
रचि क्रान्ति-कुंड बलिबेदी पर
बलि बनलि बीर बागी बलिया

जब अकुअन के ललकार भइल
जन - जन में जयजयकार भइल
रन बाँका बीर जवानन के
गर्जन, तर्जन, फुफुकार भइल

अस फउदि चललि अड़भंगिन के
नंगा, भूखा, खड़जंगिन के
बलिया में अइसन जानि पड़लि
जनु आइल अंत फिरंगिन के

पलकनि में कवन कमाल भइल
कोना - कोना हड़ताल भइल
सदियन से सुतल गुलामी में
रन बीच खड़ा कंकाल भइल

नोकरशाही रिसिआइ चललि
दल बागिन से अउँजाइ चललि
काँऽगरेस - भवन का फाटक पर
पहरा आपन बइठाइ चललि

फिनु बागी बीर जलूस चलल
लुकि, छिपि सँग जवरि जसूस चलल
बलिया का चउक-इनारा से
जनु क्रान्ति-राह पर रूस चलल

आगे महिला-दल बीर चलल
फिनु छात्र-गोल रनधीर चलल
मचि गइल पलक में उथल-पुथल
दल साजि दउरि दलगीर चलल

जहँवा ई बागी गोल गइल
खुलि अँगरेजन के पोल गइल
कच-हरी कचहरी बंद भइलि
सभ हाकिम डावाँडोल भइल

दुइ दिन अइसन हड़ताल भइल
तनि तेलो-नून मुहाल भइल
दउरति पुलिसन के कार रहलि
सरकारी दल बेहाल भइल

चुपके पुलिसन के गोल चलल
सुतला में धावा बोल चलल
जेहल में राति अन्हरिया में
चालीस बीर अनमोल चलल

तब छात्रन के अस भीर चललि
बलिबेदी बीच अधीर चललि
बंदर - सेना जनु राघव के
लंका के घेरा चीर चललि

'आजाद-ट्रेन' झमकात चललि
इठलाति चललि, बलखात चललि
रुकि-रुकि, चलि-चलि के काशी से
अगुआति चललि, पिछुआत चललि

झंडा ऊपर फहरात चलल
इंजन ऊपर लहरात चलल
हरवाहन के चरवाहन के
दल चिढ़ुरि बइठि मुसुकात चलल

हर टीसन रन-मयदान बनल
हर गाँव पड़ाव पुरान बनल
बलिया के बागी सेनानी
हर बच्चा, बृद्ध, जवान बनल

जब आजादी के रेलि गइलि
सगरे बलिया के हेलि गइलि
अस जानि पड़ल नोकरशाही
पहिली बाजी में खेलि गइलि

बलिया भर में परचार भइल
हर गाँव टोल तइयार भइल
आपन-आपन सेना ले-ले
अगहुर सगरे सरदार भइल

बारह अगस्त के पौ फाटलि
तुरते बागी बलिया जागलि
पगलन के सेना जउरि, दउरि
चढ़ि चललि मस्त रन में पागलि

हुंकार करति रन बीच बढ़लि
बयरिन का तुरत नगीच बढ़लि
कन - कन धरती बलिवेदी के
अपना खूनन से सींच बढ़लि

पहिले तारन के काटि बढ़लि
लाइन के रेल उपाटि बढ़लि
टीसन पर के कागद - पत्तर
लोहा लक्कड़ के छाँटि बढ़लि

टीसन-टीसन के जारि बढलि
खंभन के तोरि उपारि बढ़लि
बाबू लोगन का हाथन में
उनके असबाब सँभारि बढ़लि

सगरी सड़कनि के कोड़ि बढ़लि
पुलिया - पूलन के तोड़ि बढ़लि
पटरी के पेड़ उलाटि, काटि
सभ राह छवरि ले मोड़ि बढ़लि

थाना-थाना पर टूटि बढ़लि
डकखाना ऊपर जूटि बढ़लि
कुछ जारि बढ़लि, कुछ खोरि बढ़लि
कुछ कहीं जोश में लूटि बढ़लि

हर कोना बागी गोल गइल
गाँधी के जय-जय बोल गइल
कचहरी, रेल, चौकी, थाना
डकखाना, धावा बोल गइल

सभ रेल, तार बेकार भइल
सरकारी दल लाचार भइल
हर सड़कि, खबरि ले बंद भइल
पहरा हर ओर हमार भइल

हर ओर विजय मँडराइ चललि
बागी सेना अगराइ चललि
हर ओर फेंकि हथियारन के
सरकारी फउदि पराइ चललि

दल बागिन के बरजोर भइल
काँऽगरेस-भवन का ओर गइल
पहरा के पुलिस सिपाही सभ
जाने कब कवना ओर गइल

फिनु क्रान्ति-केन्द्र खुलि गइल उहाँ
बागी रजधानी भइलि उहाँ
बलिया के बागी सेना के
अनमोल शिविर बनि गइल उहाँ

कशमश के समर जुझार रहल
दिन-राति सात हड़ताल रहल
बनिया, मजदूर, किसान बनल
जनु बागिन के सरदार रहल

अठवाँ दिन के अतवार रहल
जन-जन का जोश अपार रहल
हर सड़क, गली, गोला, टोला
सूना सगरे बाजार रहल

सूरज के रथ आकाश चलल
धरती ऊपर परकाश चलल
तब बागिन का रजधानी से
आडर बनियन का पास चलल

विश्राम-बिगुल जब बाजि चलल
बागी दल मन में गाजि चलल
दउरि दुकान सब खोलि खोलि
सड़कनि, गलियनि में साजि चलल

रिमझिम झहरात फुहार रहल
तनि गइल गगन ले तार रहल
बुनिया बनि-बनि धरती ऊपर
बरिसत बदरा के प्यार रहल

लुकि-छिपि चुप सूरज झाँकि चलल
बदरी में मुँह के ढाँकि चलल
बलिया का क्रान्ति-कुटीरनि में
जनु मोल जौहरी आँकि चलल

जइसे जन-जन बाजार चलल
घर-घर से लोग अपार चलल
तइसे यमदूतन साथ उहाँ
लारी ले तहसीलदार चलल

लारी दउरलि घर - घरर - घरर
गोली दउरलि सर - सरर - सरर
फफकार शहीदन - खूनन के
छूटल तन से फर - फरर - फरर

मुअले केतने घर का अंदर
दूकान दलानिनि का भीतर
भइले मरि 'मोहितलाल' अमर
शंकर मंदिर का फाटक पर

बंदूकि कहाँ गोली दागलि ?
केने, कइसे लारी भागलि ?
ऊहे देखल, ऊहे जानल
जेके जेने गोली लागलि

सइ-सइ घायल भुइँ चूमि चलल
सइ-सइ रन में फिनु झूमि चलल
बलिया के नव-नव रतन लूटि
दल पुलिस समर से घूमि चलल

फिनु युवकन में अस जोश बढ़ल
जनु महाकाल के रोस बढ़ल
सभ लपटि-झपटि बलिबेदी पर
पागल अइसन बेहोश बढ़ल

घन-घनन-घनन-घन ढोल बजल
दन-दनन-दनन-दन गोल सजल
रिपु दल बन्दूकि, किरिच, भाला
खन-खनन-खनन-खन खोल चलल

बागी सेना मँड़राति चललि
लाखन लोगन के पाँति चललि
तब दानव नोकरशाही के
पगलाइलि पुलिस जमाति चललि

प्रानन के बाजी बोलि चललि
रन भीतर करत किलोलि चललि
बागी सेना रन - धूरी के
अपना लोहू में घोलि चललि

जब जागल जोश जवानन का
रन में मजदूर किसानन का
चुकि सभ गोली बारूदि गइलि
सीना ऊपर मरदानन का

थानन में लहरति आगि चललि
पुलिसन के टोली भागि चललि
बागी बलिया रन मंदिर में
जब रन-मस्ती में पागि चललि

खूनी फाटक झनकार खुलल
जननी के कारागार खुलल
बलिदानी का रन - आँगन में
भारत के भागि - किवार खुलल

ऊ अकथ अमोल कहानी बा
बलिया के अमर निशानी बा
कोना-कोना साखी सगरे
गवईं के छप्पर छानी बा

रन-मयदान (द्वाबा)

बलिया का रन मयदानन पर
रन बाँका बीर जवानन पर
बलि-बलि जाले दुनिया सगरी
बलिबेदी का बलिदानन पर

नर कवन न रन के शूर रहल
घर कवन न चकनाचूर रहल
अस गाँव कवन, अस ठाँव कवन
रन-घेरा से जे दूर रहल

बलिया का पूरुब आरी पर
द्वाबा डटि गइल दुआरी पर
तइयार हजारन बीर जहाँ
अपना-अपना हर बारी पर

बलिया के बीहड़ सीना ई
मुनरी में जड़ल नगीना ई
सरजू-गंगा का गोदी में
लहरनि का बीच बसीना ई

खुलि के लेलल इतिहास जहाँ
चउआई बहल बतास जहाँ
युग-युग के अमर कहानी के
साखी धरती-आकाश जहाँ

बलिदानी प्रानी - प्रानी हऽ
हर मड़ई, टाट, पलानी हऽ
गलियनि में बीर शहीदन के
सदियन से पड़लि निसानी हऽ

किलकत हँसि जे असि-धारन पर
बलिबेदी बीच अँगारन पर
रन में शेरन अस गरजि-गरजि
बिजयी बनि जात हजारन पर

जब कुँवर सिंह ललकारि चलल
गोरन पर छापा मारि चलल
सभ का आगे बनि के बागी
द्वाबा के बीर कतारि चललि

तहँवा जब क्रान्ति हिलोरि चललि
सभ लोगन के झकझोरि चललि
द्वाबा के बागी धरती के
चावा-चावा ले बोरि चललि

भिनुसार भइल जब राति चललि
ललकी लोही मुसुकाति चललि
बीगुल बाजल द्वाबा भर के
बागी - टोली लहराति चललि

हर गाँव चलल, हर गोल चलल
हर ठाँव चलल, हर टोल चलल
हलबल, दलबल, दउरल, धउरल
दल बागिन के अनमोल चलल

बागिन का वीर तराना पर
रन का कड़रवा का गाना पर
अस जागल जोश जवानन में
सभ चलल दनादन थाना पर

हर गाँवन से दल जूटि चलल
जब थाना ऊपर टूटि चलल
बरियार बैरिया थाना के
पल भर में धीरज छूटि चलल

पगलाइलि पुलिस अवाक भइलि
मिलि धूरि धकाधक धाक गइलि
छन में जइसे जबदा लागल
गोला-गोली मिल खाक गइलि

फाटक पर थानेदार गइल
पहली बाजी में हार गइल
सुलहा से बागी सेना के
थाना ऊपर अधिकार भइल

छन में झंडा लहराइ चलल
थाना ऊपर फहराइ चलल
गरजन-तरजन में उमड़ि-घुमड़ि
बदरा जयगाना गाइ चलल

बागी - सेना मुँह मोरि चलल
जइसे रन-लहरि सिकोरि चललि
तइसे चुपके थाना टोली
छिपि के बलिया का ओरि चललि

बलिया से पाँच सवार चलल
सँग ले हरवा-हथियार चलल
सुनसान रइनि में लुकि-छिप के
द्वाबा के जबे डँड़ार चलल

सुनगुन मिलि गइल किसानन का
पहरा पर जगल जवानन का
सन से कानन में भनक पड़ल
तइसे बागी - परधानन का

सरदारन का ललकारा पर
चट पहुँचल चोट नगारा पर
घर-घर से दउरल लोग चलल
बागिन का बीर अखारा पर

सरपट झट झपटि जवान चलल
गँवई के चुनल किसान चलल
हर ओर हजारन बाँधि कफन
बलिबेदी के बलिदान चलल

बागिन के फउदि अधीर चललि
तीसन हजार के भीर चललि
बड़वानल के लहराति लहरि
जनु शान्ति-समुन्दर चीर चललि

जन-जन मस्ती में चूर चलल
भरि जोश किसान मजूर चलल
बच्ची, बच्चा, बूढ़ी, बूढ़ा
सभ बिटुरि बहादुर शूर चलल

बलिया से पाँच सवार चलल
सँग ले हरवा-हथियार चलल
सुनसान रइनि में लुकि-छिप के
द्वाबा के जबे डँड़ार चलल

सुनगुन मिलि गइल किसानन का
पहरा पर जगल जवानन का
सन से कानन में भनक पड़ल
तइसे बागी - परधानन का

सरदारन का ललकारा पर
चट पहुँचल चोट नगारा पर
घर-घर से दउरल लोग चलल
बागिन का बीर अखारा पर

सरपट झट झपटि जवान चलल
गँवई के चुनल किसान चलल
हर ओर हजारन बाँधि कफन
बलिबेदी के बलिदान चलल

बागिन के फउदि अधीर चललि
तीसन हजार के भीर चललि
बड़वानल के लहराति लहरि
जनु शान्ति-समुन्दर चीर चललि

जन-जन मस्ती में चूर चलल
भरि जोश किसान मजूर चलल
बच्ची, बच्चा, बूढ़ी, बूढ़ा
सभ बिटुरि बहादुर शूर चलल

जइसे बागी सरदार चलल
फाटक पर थानेदार चलल
कुछ बागिन के भीतर लेके
झट बंद करा के द्वार चलल

बागी सेना तब झूमि चललि
नियरा थाना का जूमि चललि
गोली अघोर बनि बागिन के
छन बीच करेजा चूमि चललि

जब दगलि उहाँ गोली दन-दन
तब खुललि इहाँ छाती तन-तन
धरती खूनन से लाल भइलि
बनि लाल गइल रन के कन-कन

आगिल सेना रन बीच बढ़लि
रन भूमि लहू से सींच बढ़लि
सीनन पर गोली सनन-सनन
छन-छन में लहू उलीच बढ़लि

जहवाँ एगो बलिदान भइल
तहवाँ सइ-सइ अगुआन भइल
खिलवाड़ खिलाड़ी बागिन का
रन भीतर आपन प्रान भइल

चढ़ि-चढ़ि भाइन का लाशनि पर
घायल का छूटति साँसनि पर
आगे जाये के होड़ लगलि
रन में छछात यम-फाँसनि पर

जस-जस थाना नियरात रहल
दल बागिन के अगरात रहल
खूनी ई लीला देखि ढरकि
सूरज मुँह मूँदत जात रहल

रिसि बस तब थानेदार चलल
झंडा पर हाथ पसारि चलल
खलबली मचलि जन - सेना में
झंडा जब नीच उतारि चलल

हर ओर घोर अन्हियार रहल
सूझत ना कते किनार रहल
सिर धुनि, दाँतन के पीसि-पीसि
दल बागिन के लाचार रहल

जइसे झंडा पर वार भइल
सेना में हाहाकार भइल
कौशलकुमार मरताना के
मुँह लाल लहकि अंगार भइल

दुधमुँहा लाडिला लाल रहल
जननी के मदनगुपाल रहल
अध खिललि कली अध उगल सूर
बचपन में बाघ विशाल रहल

'अभिमन्यु' के अवतार रहल
तन - मन में जोश अपार रहल
बच्चन का बागी टोली के
बच्चा बागी सरदार रहल

अचके में बिजुली चमकि चललि
खूनी थाना पर झमकि चललि
छन में नभ-मंडल के चीरत
रन में रन-चंडी तमकि चललि

जस छूटत तीर शरासन से
जस टूटत नखत अकाशन से
तरु पलकन में कौशलकुमार
उड़ि ऊपर चलल कहाँ सन से

मस्ती में उड़त अकाश चलल·
अपना झंडा का पास चलल
हनुमान उड़ल जनु लंका पर
छन में उनचास बतास चलल

गिरि गइल जवान कमीनन से
छिदि गइल शरीर सँगीनन से
पर प्रानन से प्यारा झंडा
लगि गइल चिपकि के सीनन से

चलनी शरीर के खालि भइलि
सभ देहि रँगाइ गुलाल भइलि
बहियाँ दूनों झंडा ले-ले
फूलल परास के डाल भइल

घन गरजि गगन में रोइ चलल
धरती पर आँसू बोइ चलल
छिपि सूरुज पच्छिम सागर में
मुँह खूनन बीच डुबोइ चलल

कौशलकुमार झट झूमि चलल
हँसि बलिबेदी के चूमि चलल
उड़ि प्रान पखेरू सरग गइल
पर तन दउरल रन-भूमि चलल

झंडा के लाज बचाइ चलल
तन - मन दे मोल चुकाइ चललि
बनि आप अमर बलिबेदी पर
बलिया के अमर बनाइ चलल

जब ले तन भीतर प्रान रहल
लहरत झंडा के शान रहल
उड़ि गइल प्रान पर हाथन में
झंडा के बाँस निसान रहल

मुँह चूमि मौत बलिहारि गइलि
रनभूमि बीर पर वारि गइलि
बलिया जननी गोदी में ले
खूनन के आँसू ढारि गइलि

रकतन के तन पर हार रहल
झंडा जनु कफन ओहार रहल
भुइँ-सेज सजल रन-आँगन में
सभ बागिन के परिवार रहल

ओठन पर खेलत हास रहल
मुँह ऊपर उगल प्रकाश रहल
अनमोल मौत का स्वागत में
बागिन में बढ़ल हुलास रहल

धरती, पताल, नभ, पानी में
अस मौत कहाँ जिनगानी में
सिहकत सुर, नर, मुनि, असुर सभे
अस अवसर कहाँ जवानी में

दिन गइल, अन्हरिया राति रहलि
ऊपर गोली घहराति रहलि
खूनी रन में बागी टोली
मस्ती में आगे जाति रहलि

गोली छाती के जोड़ रहल
दूनों के लागल होड़ रहल
घमटन का घोर लड़ाई में
दूनों के आगे गोड़ रहल

बनि अमर सरग उनईस चलल
बारी बारी दे शीश चलल
भारत-जननी पर प्रान लुटा
ले-ले पग-धूरि अशीश चलल

पहरन ले जब बन्दूकि चललि
पुलिसन के गोली चूकि चललि
बयरी-सेना तब दउरि-धउरि
डरि-डरि घर भीतर ढूकि चललि

प्रानन के भिच्छा माँगि चलल
पग पर धरि आपन पागि चलल
पुलिसन सँग थानेदार सरकि
सुनसान रइनि में भागि चलल

बागी सेना ललकारि बढ़लि
सगरे थाना के जारि बढ़लि
सूतल रन-सेज शहीदन पर
अँसुवन के माला डारि बढ़लि

दरियाव खून के हेलि चलति
खूनन के होली खेलि चललि
सिर ऊपर उड़त तिरंगा ले
बागी सेना बगमेलि चललि

हिंसा तब बाजी हारि चललि
धरि धरती पर तरुआरि चलल
जयमाला सहित अहिंसा के
अपने आरती उतारि चललि

(सुरेमनपुर)

संझा जब सरकि अकास चललि
गइया बछरु का पास चललि
बदरी जब लाल पहिरि चुनरी
सूरज के ले रनिवास चललि

पंछी खोंता का ओर चलल
चरवाह चरा के ढोर चलल
दिन डूबल, उतरति राति रहलि
तब ले बागिन के शोर चलल

सभ शूर सुरेमनपूर चलल
जब रन-मस्ती में चूर चलल

बागी सेना ललकारि बढ़लि
सगरे थाना के जारि बढ़लि
सूतल रन-सेज शहीदन पर
अँसुवन के माला डारि बढ़लि

दरियाव खून के हेलि चललि
खूनन के होली खेलि चललि
सिर ऊपर उड़त तिरंगा ले
बागी सेना बगमेलि चललि

हिंसा तब बाजी हारि चललि
धरि धरती पर तरुआरि चलल
जयमाला सहित अहिंसा के
अपने आरती उतारि चललि

(सुरेमनपुर)

संझा जब सरकि अकास चललि
गइया बछरु का पास चललि
बदरी जब लाल पहिरि चुनरी
सूरज के ले रनिवास चललि

पंछी खोंता का ओर चलल
चरवाह चरा के ढोर चलल
दिन डूबल, उतरति राति रहलि
तब ले बागिन के शोर चलल

सभ शूर सुरेमनपूर चलल
जब रन-मस्ती में चूर चलल

पुलिसन सँग टीसन के बाबू
सभ सरकि दनादन दूर चलल

दल बागिन के फुफुकारी चलल
सगरे टीसन के जारि चलल
कुछ तोरि चलल, कुछ फोरि चलल
कुछ मोरि, मरोरि, उपारि चलल

(बकुलहा)

दल सजल बकुलहा बीच गइल
टीसन का जहाँ नगीच गइल
हर गाँवन से दल दउरि-जउरि
बागी सेना में खींच गइल

टीसन में आगि लगाइ चललि
कागद, पत्तर छितिराइ चललि
लाइन, खंभा सभ तार तोरि
सेना आगे अगराइ चललि

(नौरंगा)

रंगी नौरंगा घाटि रहलि
तहँ इस्टीमर के बाटि रहलि
गंगा गोदी में गाँवन के
द्वाबा में बड़की हाटि रहलि

कल-कल गंगा लहरांति रहलि
नौरंगा से टकराति रहलि
तहवें तनि दूर बगइचा में
बागिन के जमल जमाति रहलि

झुकि झूमत तरल-तरंगनि पर
लहरनि का फेन-उत्तुंगनि पर
सोरह के इस्टीमर आइल
मस्ती में भरल उमंगनि पर

दल बागिन के अगराइ चलल
इस्टीमर पर मँड़राइ चलल
सर-सर समान इस्टीमर के
पानी ऊपर उतराइ चलल

'हरमश' कशमश में चूर भइल
सभ पटरा चकनाचूर भइल
लंगर छूटल, इंजन टूटल
आँखिन से ओझल दूर गइल

जरि जब इस्टीमर घाटि गइल
जय गीत गगन में पाटि गइलि
बागी सेना हल्दी जल्दी
पुलिया - पूलन के पाटि गइलि

(हल्दी)

दल बल हल्दी का ओर गइल
गँवईं में भारी शोर भइल
गंजा, शराब, कलवरिया पर
दल बागिन के घमघोर गइल

तुरतें तीनूँ के जारि चलति
बागी सेना ललकारि चलति

डकखाना में फिनु लूक लगा
भरसर का बीच बजारि चललि

(भरसर)

भरसर का ऊपर टूटि चललि
गाँवन-गाँवन से जूटि चललि
कागद पत्तर छितरा-बिखरा
सेना डकखाना लूटि चललि

(बसरिकापूर)

दल साजि बसरिकापूर चलल
रन बीच किसान मजूर चलल
डकखाना के लूटत फूँकत
रन का मस्ती में चूर चलल

(गड़वार)

बाँका बागी गड़वार रहल
गढ़वारन में सरदार रहल
रन, रारि, मारि में युग-युग से
दल-बल जहवाँ तइयार रहल

जब 'रुस्तमअली, रिसाइ चलल
डुमरी से फउदि सजाइ चलल
रन-रारि भइलि बरजोरी से
गड़वार निसान बजाइ चलल

सरनाम भइल बलिदानी में
अबले बा दूह निसानी में
बीरन के शिर के चुनलि गइलि
मीनार जहाँ कुरबानी में

फिनु समर बीच गड़वार चलल
थाना पर बीस हजार चलल
थर-थर काँपल, सर-सर भागल
'बुढ़ऊँ' में थानेदार चलल

पुलिसन के टोली भागि चललि
जनु क्रान्ति-लहरि से जागि जगलि
सुनसान भवन में थाना का
लपलप ललकारति आगि चललि

उड़ि धुआँ घुमुरि आकाश चलल
झझकारि बतास हहास चलल
दश दिशि से जइसे उमड़ि-घुमड़ि
नोकरशाही के नाश चलल

फिनु आगे मारू ढोल चलल
बागिन के सगरे गोल चलल
'बुढ़ऊँ' से ले हथियारन के
डहरिनि में करत किलोल-चलल

बड़गाँव

साधुन के सुघर कुटीर जहाँ
तपसी अवधूत फकीर जहाँ

'सतनामी' संत, महंथन के
युग-युग से लगलि लकीर जहाँ

सन सनतावनि बलिदानी में
अगुआन रहल कुरबानी में
इतिहास अमर बलिबेदी के
अबले बा बचल कहानी में

जब छिड़ल हिन्द में जङ्ग रहल
हर ओर मचल हुरदंग रहल
सिरमौर साल सनतावनि में
युवकन में बढ़ल उमंग रहल

गोरन के एगो गोल चलल
गाँवन पर धावा बोल चलल
जब बड़ागाँव का गोयँड़ में
लइकन से करत किलोल चलल

तब जागल जोश जवानन में
जन-जन में आनन-फानन में
सभ ले ले के हथियार चलल
बजि गइल बिगुल मयदानन में

सगरे जनता जब जागि चललि
गोलिन से बरिसति आगि चललि
तन-धन-जन के संहारन से
गोरन के सेना भागि चललि

बनि विजय बिनाश छ्रुात चलल
रिसि बश 'शनि' साढ़े सात चलल
मदमातल गोल फिरंगिन के
यमदूत नियर मँडरात चलल

रिपु-दल जुटि चलल हजारन में
सरजू का तीर कछारन में
बनि गाँव नरक के कुंड गइल
यमदूतन का संहारन में

फिनु प्रलय-घटा घनघोर उठलि
नगरी का चारु ओर उठलि
खूनन के बरखा बरिसि-बरिसि
गलियन में नदी-हिलोर उठलि

ओ 'कतल-आम' के बेरा में
गोरन का बीहड़ घेरा में
जाने के-के, कइसे बाँचल
यम-सेना गइलि बसेरा में

साखी वा अबले राख इहाँ,
धरनी, टोटा, घर, परख इहाँ
कुछ बसलनि भागि बिदेशन में
जेके मिलि गइल सुराख जहाँ

जबले अंगरेजी राज रहल
तबले बागी सिरताज रहल
सुनि बड़ागाँव के नाँव सनकि
गोरन के जात समाज रहल

बनि विजय बिनाश छछात चलल
रिसि बश 'शनि' साढ़े सात चलल
मदमातल गोल फिरंगिन के
यमदूत नियर मँडरात चलल

रिपु-दल जुटि चलल हजारन में
सरजू का तीर कछारन में
बनि गाँव नरक के कुंड गइल
यमदूतन का संहारन में

फिनु प्रलय-घटा घनघोर उठलि
नगरी का चारु ओर उठलि
खूनन के बरखा बरिसि-बरिसि
गलियन में नदी-हिलोर उठलि

ओ 'कतल-आम' के बेरा में
गोरन का बीहड़ घेरा में
जाने के-के, कइसे बाँचल
यम-सेना गइलि बसेरा में

साखी वा अबले राख इहाँ,
धरनी, टोटा, घर, परख इहाँ
कुछ बसलनि भागि बिदेशन में
जेके मिलि गइल सुराख जहाँ

जबले अंगरेजी राज रहल
तबले बागी सिरताज रहल
सुनि बड़ागाँव के नाँव सनकि
गोरन के जात समाज रहल

जब नगर निलाम-तिलाम रहल
भइ गइल बिधाता बाम रहल
जमि इहाँ बैरिया-पांडे के
नौकर-चाकर सरनाम रहल

तब 'रंगलाल' का बानी में
बरि आगि गइलि जनु पानी में
बोटी-बोटी बनि 'रंगलाल'
बटि गइल इहाँ कुरबानी में

सेना के पड़ल पड़ाव इहाँ
जुलुमन के भइल जमाव इहाँ
पर बागिन के बिगड़ल मन के
जब झुकल न तनिको ताव इहाँ

तब सुलह भइल मयदानन में
फिनु फिरल गाँव रन-आँगन में
झुकि गइल बैरिया के पांडे
बागी शूरन का शानन में

जब क्रांति बयालिस बीच चललि
धरती खूनन से सींच चललि
तब बड़ागाँव के बागिन के
जन-जन के जोश उलीच चललि

जगि जोश गइल हर प्रानी में
अस खउलल खून जवानी में
घर-घर बनि बागी निकलि चलल
तइयार समर बलिदानी में

जब आठ पुलिस के गोल चलल
बलिया में धावा बोल चलल
जज के पहुँचा के गाजीपुर
बन्दूकि दुनल्ली खोल चलल

जब बड़ागाँव नियराइ चलल
कुछ बिरही बाति सुनाइ चलल
तब लइकन के दल मस्ताना
दुइचारि साथ तरनाइ चलल

बतकूचनि में कुछ रारि भइलि
रिसियाइ पुलिस तइयारि भइलि
दन-दन आठो बन्दूकनि से
गोली गोलन के मारि भइलि

हर-हर गोली हहराति चललि
लइका-टोली मदमाति चललि
लुकि लुकि,छिपि-छिपि,सुति-सुति,उठि-उठि,
लपटाति,झपटाति मँड़राति चललि

पहरन का आँखि-मुदाइनि में
खावाँ, खेतन में, खाइनि में
रहि गइलि न गोली पेटी में
तब पुलिस चललि भगि लाइनि में

फेफना

बरबीर फेऽफना गाँव रहल
गूँजल आकाश में नाँव रहल

रन-आँगन में बलिबेदी पर
जन-जन के आगे पाँव रहल

जब पुलिस समर में हारि गइलि
लाइनि भीतर मन मारि गइलि
लइकन का लोह-लड़ाई के
करनी करतूति उघारि भइलि

बलिया में भारी शोर भइल
छुइ गइल पाक बरतोर गइल
गोला, गोली, भाला ले-ले
दल दउरि फेफना ओर गइल

फेफना में फइलल जोश रहल
कोना-कोना जय-घोष रहल
रन-भूमि भरलि अस बागिन से
प्रानी-प्रानी बेहोश रहल

सेनानी सागर शूर रहल
बच्चा बागी मशहूर रहल
पुलिसन का गोली का आगे
पागल मस्ती में चूर रहल

सन से गोली लहराति चललि
रन में आगे हहराति चललि
नर-नाहर सागर के लोहू
पीके मस्ती में माति चललि

(सोहाँव)

जब जागल शेर सोहाँव चलल
मण्डल भर के सभ गाँव चलल
बागी - सेना - सरदारन के
रन बीच अगाड़ी पाँव चलल

दम-दम-दम मारू ढोल बजल
दन-दन बीरन के गोल सजल
चौकी, टीसन पर बड़ागाँव
पल भर में धावा बोल चलल

तहँ बड़ागाँव के बीरन के
मिलि चललि फउदि रनधीरन के
चौकी, टीसन के फूँकि तापि
दल आगे बढ़ल अधीरन के

नरही बागी सरदार चलल
थाना ऊपर ललकार चलल
दूनों मण्डल के बागिन के
दल दउरल तीस हजार चलल

फर-फर झंडा फहराइ गइल
थाना ऊपर लहराइ गइल
बागी दल दउरि-धउरि आगे
मस्ती में गाना गाइ गइल

नरही-डकखाना फूँकि चलल
सुरही में वर्दी लूटि चलल
कोटवा के अउरे कोरंटा के
दूनो डकखाना टूटि चलल

फिनु कलवरिया उजियार जललि
कोटवा इस्टीमर घाटि जललि
बागी सेनौ सभ सड़कॉन के
पुलियनि के तोरि उपाटि चललि

(रामलगन सिंह कांड)

दल बयरिन के अकुलाइ गइल
सगरे हथियार छिनाइ गइल
तब कल-छल के अजगुत फंदा
बागिन ऊपर मँड़राइ गइल

फिनु रामलगन चुपचाप चलल
लगवा नेता के छाय चलल
खूनी परंवाना के ले के
काशी में अपने आप चलल

आगे झंडा फहरात चलल
खादी में गात सुहात चलल
गाँधी टोपी में रामलगन
बनि के नेता मुसुकात चलल

तन पर छल के सिंगार रहल
भारत माता के भार रहल
पहली गोली दागेवाला
बलिया के तहसील्दार रहल

लुक-छिपके गुपचुप कार चललि
काशी ले बाजी मार चललि
रिसि भरल फिरंगिन का आगे
खूनी पाती फुफुकार खुललि

मुँह तमकि तमातम लाल भइल
सभ के जनु जोश-उबाल भइल
हर गोरा गोहुअन साँप नियर
बागी बलिया के काल भइल

फिनु रामलगन अगराइ चलल
बलिया का ओर धधाइ चलल
बिरन्ही का बड़का छाता में
जनु लपकि लुकार लगाइ चलल

सुख-सागर में विष घोलि चलल
जनु बाज लवा पर खोलि चलल
बुलवा के विपति बरूथन के
बलिया पर धावा बोलि चलल

बनि हवा कार लहराति चललि
बलिया का ओर पराति चललि
मधु के छत्ता लेबे खातिर
दल साजि किराति जमाति चललि

गाजीपुर सीमा पार भइलि
नरही जब खूनी कार गइलि
तहँ रहलि तनी पुलिया टूटलि
असगुन पानी के धार भइलि

फँसि कार गइलि, रुकि राह गइलि
दस दिशि ले दूर निगाह गइलि
तहँ चरवाहन के गोल रहल
बगिया का बीच सलाह भइलि

चट चतुर-चतुर चरवाह चलल
भरि के मन में उतसाह चलल
सभ झपटि कार का पास गइल
तब ले कवनो हरवाह चलल

जय-जय गाँधी बोल चलल
जुटि बागिन के तब गोल चलल
चट सरपट तहसीलदार उहाँ
सभ खोलि पलक में पोलि चलल

नरही झट तहसील्दार चलल
जइसे पुलिया का पार चलल
तइसे लाठी, डंडा, मूका,
घूसा के प्रबल प्रहार चलल

सुनि बागिन के सरदार गइल
बयरी पर अवढर ढार भइल
सभ मारि प्यार में बदलि गइलि
घर घायल तहसील्दार गइल

(चिलकहर)

जइसे दिन में दुइपहर भइल
दल बागिन के चिलकहर गइल
गड़ि गइल तिरंगा टीसन पर
सगरे दल रसड़ा शहर गइल

(रसड़ा)

रन-चंडी बा बरदानि जहाँ
बीरन के गढ़ी पुरानि जहाँ
अस नाथ-नगर का धरती में
बागी बीरन के खानि जहाँ

तहवाँ के बागी गोल चलल
टीसन पर धावा बोल चलल
सिर ऊपर उड़त तिरंगा ले
ललकारत मारू ढोल चलल

बीसन हजार के भीर चललि
बागी सेना रनधीर चललि
बीगुल का एक इशारा पर
टीसन के बाड़ा चीर चललि

जुटि-जुटि जब जउरि जवार चलल
हर गाँव, गरीब, गँवार चलल
छन में टीसन के लूटि, फूँकि
अगहुर बागी सरदार चलल

सभ दल दक्खिन का ओर गइल
बागी बीरन के शोर भइल

चट तूरि-तारि डकखाना के
वल बयरिन के झकझोर गइल

दल दउरि चलल फिनु थाना पर
रन में बन्दूकि निसाना पर
गड़ि गइल उहाँ बिजयी झंडा
थाना, तहसील, खजाना पर

गँवई के बीर जवानन के
बागी मजदूर किसानन के
ठाकुरप्रसाद का हाता में
बढ़ि चललि फउदि मरदानन के

आँगन में बीज गुदाम रहल
थाना के साज-समान रहल
नोकरशाही का सेना के
बाहर में लागल लाम रहल

मचि गइलि जुझारि, भिड़ंत भइल
लुटि बीज गुदाम तुरंत गइल
छिपि के थाना के पुलिस सभे
जब बदलि भेस सरकंत भइल

जय में खूनी जलपान भइल
बलिवेदी के सनमान भइल
छन में हाता के धरती के
कन-कन सनि लहू-लुहान भइल

धोखा के पिंजर पोल रहल
जहँ जमदूतन के टोल रहल
रम्मा, खनता ले फाटक पर
मुसहर के बइठल गोल रहल

जइसे भीतर जयकार भइल
पूरा स्वागत सतकार भइल
हाता में घिरल निहत्थन पर
तइसे पुलिसन के वार भइल

सिरपर गोली हहराति चललि
हर ओर मौत मँडराति चललि
छटपट में हाता के सगरी
बागी सेना अकुलाति चललि

लपकल जे ताकि दुआरि चलल
छन में रम्मा सिर फारि चलल
भीतर बन्दूकि, किरिचि, भाला,
दल पुलिस निकारि कटारि चलल

लउकत ना कतें किनार रहल
डगमग डोंगा मझधार रहल
भरि गइल गगन में, आँगन में
बागिन के हाहाकार रहल

तब 'विश्वनाथ' अरु 'हरी' चलल
मस्ती में नाचत फरी चलल
जगि गइल जोश फिनु बीरन में
दल बागिन के तरुपरी चलल

दुपहर का खूनी बेरा में
दुइ बीर चलल रन घेरा में
ले ले के प्रान हथोरी पर
पहुँचल जब मौत बसेरा में

बरि लहरि चललि कुरबानी में
दूनों का सरग-रवानी में
जुटि जउरि चललि बागी सेना
छन में हाता बलिदानी में

हाता में अइसनि भीर चललि
घर-घर से दउरि अधीर चललि
बयरी-सेना अकुलाइ उठलि
कवनो ना जब तदबीर चललि

तब, ले प्रानन के दान चललि
जन-सेना के बरदान चललि
रन जीति बली बागी सेना
आगे गावत जयगान चललि

(हलधरपुर)

बागी सेना रन रोपि चललि
हलधरपुर थाना तोपि चललि
लुकि छिपि के पुलिसन के टोली
जाने कब कहाँ अलोपि चललि

थाना, डकखाना जारि चललि
बयरी के ब्यूह बिगारि चललि

रन जीति जवानन के टोली
सीयर का ओर पधारि चलति

(सीयर)

रन में जब सीयर-शेर चलल
बलिदानी बीर-सुमेर चलल
अस जानि पड़ल आन्ही आइलि
हहरात तुफान, बँड़ेर चलल

सभ टूटि टपाटप तार गइल
टीसन दहकत अँगार भइल
खंभा उखड़ल, लाइनि उलटलि
सगरे सिंगल बेकार भइल

दस गाड़ी लूटल माल गइल
गवईं के लोग निहाल भइल
सभ पैटमैन बनि के बागी
बढ़ि आगे चलल कमाल भइल

सभ डकखाना का ओर चलल
जय-जय अकाश में शोर चलल
फूँकत, तापत, लूटत, पाटत
दल बागिन के घन घोर चलल

(चेरौंआ)

चट चुनल 'चेरौंआँ' चोपि चलल
रन-राह तमकि के तोपि चलल
सगरे खूनी मयदानन के
जब नर-सिंहन से छोपि चलल

ललकारि जुझाऊ ढोल चलल
गँवई के गहबर गोल चलल
फहरावत धजा तिरंगा के
दल बागिन के अनमोल चलल

जब बयरी-दल बेकार भइल
सन्देसा तुर्तीपार गइल
रिसिआइ चललि खूनी सेना
खुलि के बागिन पर वार भइल

चट गन मशीन फुफुकारि चललि
गोली अकाश के फारि चललि
दीया पर दउरि फतिंगा अस
बागी सेना झझकारि चललि

जन-सेना सीना खोलि चललि
जब रन-मरती में डोलि चललि
गोली-छाती का होड़न् से
रन-चंडी करति किलोलि चललि

दुइ घरी समर विकराल भइल
मयदान रकत से लाल भइल
चुनि चारि बीर बलिवेदी पर
बलिदान लाड़िला लाल भइल

गँवई का चुनल गँवारन पर
बिगड़ल बागी सरदारन पर
चुकि गोली गइलि मशीनन के
मजदूर किसान हजारन पर

ललकारि जुझाऊ ढोल चलल
गँवई के गहवर गोल चलल
फहरावत धजा तिरंगा के
दल बागिन के अनमोल चलल

जब बयरी-दल बेकार भइल
सन्देसा तुर्तीपार गइल
रिसिआइ चललि खूनी सेना
खुलि के बागिन पर वार भइल

चट गन मशीन फुफुकारि चललि
गोली अकाश के फारि चललि
दीया पर दउरि फतिंगा अस
बागी सेना झझकारि चललि

जन-सेना सीना खोलि चललि
जब रन-मरती में डोलि चललि
गोली-छाती का होड़न से
रन-चंडी करति किलोलि चललि

दुइ घरी समर विकराल भइल
मयदान रकत से लाल भइल
चुनि चारि बीर बलिवेदी पर
बलिदान लाड़िला लाल भइल

गँवई का चुनल गँवारन पर
बिगड़ल बागी सरदारन पर
चुकि गोली गइलि मशीनन के
मजदूर किसान हजारन पर

तब फउदि फिरंगी हारि चलति
चुप तुर्तीपार पधारि चलति
रन जीति प्रान दे मोल चुका
घर-घर बागी नर-नारि चलति

(उभाँव)

थाना बरियार उभाँव रहल
बलिया के बागी गाँव रहल
रन, रारि, मारि में सदियन से
अगुअन में जेकर नाँव रहल

बलिया से दूर अलोता में
मसलल मजूर हर-जोता में
जागल जब जोश बयालिस के
पशु-पंछी में, घर-खोंता में

दलपति दल आपन साजि चलल
बलिवेदी ऊपर गाजि चलल
बयरी-दल निबुकल सरकि खरकि
खिरकी से सरपट भागि चलल

तब बरबर फउदि बलूचिन के
रिसिआइलि चललि फिरंगिन के
छन में बागी सरदारन के
मन उछलि चलल रन-रंगिन के

खूनी सेना बेपीर चललि
लाइन-लाइन का तीर चललि

बागी सेना रन में आगे
ले 'चन्द्रदीप' दलगीर चललि

अगुआ लाइन का ओर चलल
दल बागिन के बरजोर चलल
सन - सनन - सनन गोली-गोला
झट छेदि छितिज के छोर चलल

गोली के जोर टटोलि चलल
दन से सीना के खोलि चलल
जब काल गाल में चन्द्रदीप
प्रानन के बाजी बोलि चलल

छन में गोली हहराति चललि
नभ मंडल में लहराति चललि
चुप चन्द्रदीप के दीप बुझा
रन में आगे अगराति चललि

तब राम अवतार रिसाइ चलल
रनधीर बीर अठिलाइ चलल
बलिवेदी पर दे प्रान दान
जननी के जीति मनाइ चलल

रन में जब गोली चूकि चललि
रिपु-सेना ले बन्दूकि चललि
विजयी बागी बीहड़ सेना
दन-दन थाना में ढूकि चललि

थाना के जीति जराइ चललि
ऊँचा झंडा फहराइ चललि
घर-घर अपना बागी सेना
रन में जयगाना गाइ चललि

(सिकंदरपुर)

रन बीच सिकंदरपूर चलल
सजि सेना बांका शूर चलल
गाँवन से जउरि जवानन के
दल बिटुरि-बिटुरि भरपूर चलल

घर-घर मजदूर किसान चलल
सिर ऊपर उड़त निशान चलल
चढ़ि घोड़ा थानेदार उहाँ
झट झपटि समर-मयदान चलल

रन रौंदत घोड़ा घूमि चलल
दल बागिन के तब झूमि चलल
टापन तर बीर जवानन के
रँगि लोहू जब रन-भूमि चलल

बागी सेना रिसिआइ गइलि
थाना ऊपर मँडराइ गइलि
वर्दी, पेटी, हथियार सँउपि
सरकारी फउदि पराइ गइलि

जब पुलिस समर से भागि चललि
थाना में लहरति आगि चललि

चउकी, डकखाना फूँकि तापि
जन-सेना गावत रागि चललि

रन का फिनु ताना-बाना पर
दल गइल मवेशी खाना पर
दिल दहलि गइल दल बागिन के
दुख गोरुन के मनमाना पर

बन्दी पशु हूँहूँकार कइल
बागिन से मौन-पुकार कइल
फाटक फूटल, ताला टूटल
खुलि सगरे करागार गइल

दिन भेजि सरग से शाम चललि
लुटि सेना बीजगुदाम चललि
फिनु कुतुबगंज के घाटि जरा
आगे सेना सरनाम चललि

जब डाक बंगला लूटि गइल
हर ओर मोरचा टूटि गइल
आजाद सिकंदरपूर भइल
बयरी-बंधन से छूटि गइल

रेवती

रन बीच रेऽवती रेलि चललि
जब जरत आगि से खेलि चललि
मंडल भर के सभ गाँवन के
बागी सेना बगमेलि चललि

सन सनतावनि के शूरन के
मन-मस्त किसान-मजूरन के
बलिबेदी पर बलखात चलल
जब दल नगीच के दूरन के

अस चललि फउदि खड़जंगनि के
बतसल बागी रन-रंगिन के
बयरी - सेना बधवास भइलि
दिल दहलल दलकि फिरंगिन के

सरकारी फउदि सिपाहिन में
युग-युग जुलुमी उदधाहिन में
डर समसि गइल, सभ भागि चलल
मिलि मिलि डहरिन के राहिन में

जन-सेना धुतुक बजाइ चललि
हर कोना से मँडराइ चललि
चउकी, टीसन, डकखाना के
दन-दन से जीति जराइ चललि

बाँसडीह

फिनु बाँसडीह बलवान चलल
बागी बलिया के शान चलल
बलि - बेला में बलिबेदी पर
बलि ले ले के जजमान चलल

बागी दल बीर बटोरि चलल
घर-घर से नाता तोरि चलल

झंझा, तूफान, बवंडर लें
रन-सागर के झकझोरि चलल

युग-युग जेकर जयगान भइल
इतिहासन बीच बखान भइल
कन-कन बा बीर शहीदन के
खूनन से लहू-लुहान भइल

सेनापति के दरबार जहाँ
गढ़ पर बागी सरदार जहाँ
सदियन से घर-घर गूँजि रहलि
जननी के करुन-पुकार जहाँ

बीरन का बीर बसेरा में
बागिन का बीहड़ डेरा में
लहराइलि क्रान्ति बयालिस में
जब बीगुल बजल सबेरा में

बजि तुरत जुझाऊ ढोल चलल
थाना पर बागी गोल चलल
गवईं के गाँवन-गाँवन के
सँग छात्र गोल अनमोल चलल

रन में छात्रन के जेलि भइलि
थाना का भीतर सेलि भइलि
घर-घर में अस बिजुली दउरलि
जनता जानन पर खेलि गइलि

झंझा, तूफान, बवंडर ले
रन-सागर के झकझोरि चलल

युग-युग जेकर जयगान भइल
इतिहासन बीच बखान भइल
कन-कन बा बीर शहीदन के
खूनन से लहू-लुहान भइल

सेनापति के दरबार जहाँ
गढ़ पर बागी सरदार जहाँ
सदियन से घर-घर गूँजि रहलि
जननी के करुन - पुकार जहाँ

बीरन का बीर बसेरा में
बागिन का बीहड़ डेरा में
लहराइलि क्रान्ति बयालिस में
जब बीगुल बजल सबेरा में

बजि तुरत जुझाऊ ढोल चलल
थाना पर बागी गोल चलल
गवईं के गाँवन-गाँवन के
सँग छात्र गोल अनमोल चलल

रन में छात्रन के जेलि भइलि
थाना का भीतर सेलि भइलि
घर-घर में अस बिजुली दउरलि
जनता जानन पर खेलि गइलि

आगे बागी सरदार चलल
बागी दल बीस हजार चलल
बंदूकि किरिचि गोली ले के
थाना से थानेदार चलल

अठिलात अगस्त अठारह पर
घड़ियाल बजल जब बारह पर
लाठी, गोली, गोला बरिसल
बागिन का गोल गहागह पर

हलचल में बागी गोल रहल
छन भर ले डावाँडोल रहल
पुलिसन के गोटी लाल रहलि
पर अरे ढोल में पोल रहल

छन-छन गोली हहराति चललि
बागी सेना बलखाति चललि
जब सगरे गोली चूकि गइलि
पुलिसन के भागि जमाति चललि

बरि आगि धुआँ आकाश चलल
लहरनि के लपट हहास चलल
थाना का लाल लहरि ऊपर
लहरात क्रान्ति-इतिहास चलल

थाना चउकी के जारि चललि
सगरी सेना ललकारि चललि
बलशाली बागी सेना से
सरकारी सेना हारि चललि

अगुअन में थानेदार चलल
बनि बागिन के सरदार चलल
जन-जन-मन में जगि जोश गइल
रन-सागर बीच जुआर चलल

बढ़ियाइल रन - मयदान रहल
बड़वानल के तूफान रहल
दस दिसि से बागी सेना में
जउरल मजदूर किसान रहल

दलबल तहसीली ओर चलल
आन्ही-झंझा झकझोर चलल
उड़ि गरद गगन के छापि चलल
सूरज के ढाँपि अँजोर चलल

सरकार बनलि लाचार उहाँ
सभ भागल पहरादार कहाँ
बनि बागी तहसील्दार चलल
ले के सगरे हथियार उहाँ

फिनु आगि लगलि तहसीली में
नोकरशाही का कीली में
अस उठल धुआँ, लहरात चलल
रिपु का रजधानी दिल्ली में

छन में सगरे सामान जरल
शासन के शान - गुमान जरल
अँगरेजन के इतिहासन के
कागद में नाम-निशान जरल

रन बीच विजय उपहार मिलल
बागिन के तीस हजार मिलल
सगरे तहसील खजाना के
रुपया, पइसा, भंडार मिलल

अगवढ़ि बाँटल तनखाह गइलि
गिनि के सभ के छव माह भइलि
तहसील, कचहरी, थाना के
टोली मन भरलि उछाह गइलि

सूरुज पच्छिम में अस्त भइल
पंछी खोंता में मस्त भइल
पनरह हजार बोरा गल्ला
लुटि बीजगुदाम समस्त गइल

दल बागिन के मँड़राइ चलल
डकखाना में अगराइ चलल
कागद, पत्तर, टीकट, फारम
सगरे छितराइ जराइ चलल

खेलिनि में टीसन जारि चललि
तारन के तोरि उपारि चललि
रन में विजयी बागी सेना
बल बयरिन के संहारि चललि

बलिया

चुहचुहिया बोललि, भोर भइल
सुकवा उगि गइल, अँजोर भइल

चह-चह चिरइनि का चहकनि से
धरती अम्बर ले शोर भइल

लोही लागलि, पौ फाटि चललि
चकई दुख दारुन काटि चललि
जग - नाटक के खूनी परदा
ऊषा मुसुकाइ उलटि चललि

कुकुहूकू मुर्गा बोलि उठल
जन-जन दरवाजा खोलि उठल
जब शीतल, मंद, सुगंध पवन
जग बीच सरग से डोलि उठल

खिलि कमल-कली मुँह खोलि चललि
भवँरा टोली कुछ बोलि चललि
फूलन का सुघर कटोरिनि में
जब प्रकृति परी मधु घोलि चललि

रन-चंडी ले खूनी खप्पर
जब नाचि चललि धरती ऊपर
खूनी अकाश में डुबुकी ले
निकलल सूरुज खूनन से तर

उनइस अगस्त झुकि झाँकि चलल
बलिवेदी ऊपर डाँकि चलल
नस-नस में बिजुली दउरि गइलि
रन में बागी दल माँकि चलल

घर-घर मजदूर किसानन में
लइकन में, बूढ़, जवानन में
रन-हरदी बाँटलि गइलि रहलि
हर खेतन में, खरिहानन में

कुचलल किसान कुकुआइ चलल
मसलल मजूर मँड़राइ चलल
बलिया का कोना-कोना से
किकुरल जवान तरनाइ चलल

जिनका हाड़न पर खूनन पर
धुक-धुक सांसनि पर सीनन पर
जग भर के जगमग महल बनल
तरतर तन चुवत पसीनन पर

गरमी, जाड़ा, भदवारी में
भूभुरि, पाला, पनियारी में
छन-छन गिनि के जिनके जाला
तलफत, सिहकत, सुसुकारी में

रिनि में सनि प्रान-शरीर गइल
जस द्रुपद-लली के चीर भइल
जिनके दुतिया का चान नियर
बावन के बढ़ते पीर गइल

जिनका घर छप्पर छानी में
मँड़ई में, फूस-पलानी में
छलिया दुनिया के भोग भरल
रग-रग में प्रानी-प्रानी में

७

मँड़ई टूटलि, फूटल बासन
ओढ़न अकास, धरती डासन
भरि पेट अनाजे में जिनके
सभ राज - पाट - धन - सिंहासन

जब उहाँ क्रान्ति लहरानि चललि
घर-घर में फइलि मसानि चललि
कड़कल अकास, धड़कल पहाड़
तड़पलि बिजुली, बहरानि चललि

सागर में ज्वार-हिलोर चलल
अंधड़, तूफान, झकोर चलल
डगमग धरती, थर-थर दुनिया
जनु प्रलय-पवन झकझोर चलल

बजनी के बाजा बाजि चलल
बागी दल आपन साजि चलल
गवईं के गोल जवानन के
जब रन-आँगन में गाजि चलल

विजयी झंडा फहरात चलल
सेना ऊपर लहरात चलल
भुइँ पर किरनिनि के जालि बिछा
नभ में सूरज अगरात चलल

दल बयरिन के तइयार रहल
ले-ले सगरे हथियार रहल
सड़कनि का नाका-नाका पर
पग-पग पर पहरादार रहल

मँड़ई टूटलि, फूटल बासन
ओढ़न अकास, धरती डासन
भरि पेट अनाजे में जिनके
सभ राज - पाट - धन - सिंहासन

जब उहाँ क्रान्ति लहराति चललि
घर-घर में फइलि फफाति चललि
कड़कल अकास, धड़कल पहाड़
तड़पलि बिजुली, घहराति चललि

सागर में ज्वार-हिलोर चलल
अंधड़, तूफान, झकोर चलल
डगमग धरती, थर-थर दुनिया
जनु प्रलय-पवन झकझोर चलल

बजनी के बाजा बाजि चलल
बागी दल आपन साजि चलल
गवईं के गोल जवानन के
जब रन-आँगन में गाजि चलल

बिजयी झंडा फहरात चलल
सेना ऊपर लहरात चलल
भुइँ पर किरनिनि के जालि बिछा
नभ में सूरज अगरात चलल

दल बयरिन के तइयार रहल
ले-ले सगरे हथियार रहल
सड़कनि का नाका-नाका पर
पग-पग पर पहरादार रहल

हर राह नगर के जाम रहलि
पुलिसन के लागलि लाम रहलि
हर थाना के, हर चउकी के
बिटुराइलि पुलिस तमाम रहलि

खुलि गइलि बनूखि कटारि रहलि
भाला, बरछी, तरुआरि रहलि
यमदूतन अस ललकी पगरी
लउकति हर गली बजारि रहलि

आज़ाद जिला के गाँव रहल
पुलिसन के कतेँ न नाँव रहल
कोना-कोना से बिटुरि-बिटुरि
जमि गइल नगर में पाँव रहल

लाइन भीतर दरबार रहल
बिटुराइल सभ सरदार रहल
कप्तान, कलक्टर, कोतवाल
जुटि सगरे थानेदार रहल

तहँ गद्दारन के गोल रहल
'जी, हाँ हुजूर' के टोल रहल
कुछ राय खाँव, कुछ साहु सेठ
कुछ भकुआ भगत, भकोल रहल

दुविधा में परल परान रहल
बिनु जल मछरी के जान रहल
छन भर में लावा फूटि जात
मुँह भीतर डालल धान रहल

सइकनि का ओर निगाह रहलि
कतहूँ ना तनिको राह रहलि
बाढ़ आइल खरहर धारा में
नइया जनु पड़लि अथाह रहलि

जस-जस छन बीतत जात रहल
जब-जब घंटा घहरात रहल
तस-तस चसकल चपलूसन के
दिल धुकुर-पुकुर अकुलात रहल

रन के बेरा नियरात रहल
दिन तीनि बजे नगिचात रहल
छन-छन दन-दन दल बागिन के
बिटुरल बलिया में जात रहल

देखत देखत दुइपहर भइल
ना अगर भइल, ना मगर भइल
अगनित बागिन का सेना से
घिरि तब ले सगरे शहर गइल

हर गाँव चलल, हर टोल चलल
बढ़ि एक-एक से गोल चलल
गुरिया, गुरदेलि, गड़ाँसि, लउरि,
भाला ले मारू ढोल चलल

लाखन लोगन के पाँति चललि
रन में जब जउरि जमाति चललि
अस जानि पड़ल रन आँगन में
रन-चंडी आप छछात चललि

जन-जन में जोश अपार रहल
छन-छन में जयजयकार रहल
हलचल, हल्ला, कोलाहल में
हर ओर लगल बाजार रहल

चढ़ि चललि फउदि मरदानन के
बागी बिगड़इल जवानन के
घरखूँखन के मरभूखन के
मजदूर गरीब किसानन के

दल बागिन के अनमोल चलल
जेहल पर धावा बोल चलल
पहरा के पहरू भागि चलल
जइसे भारी भुइँडोल चलल

रन में जब जयजयकार भइल
लाइन में हाहाकार भइल
चपलूसन के डगमग डोंगा
फँसि भँवर बीच मझधार गइल

केहू चुप चलल जनेरा में
केहू डँड़ियाइल डेरा में
केहू रन में दल बागिन का
घिरि गइल अचानक घेरा में

सभ सरकि सिपाही भागि चलल
लुकवा के ललकी पागि चलल
वर्दी, पेटी, हथियार सँउपि
बनि-बनि बागी जनु जागि चलल

जब 'जी सरकार' सहारा पर
नइया ना लगलि किनारा पर
तब नेतन के आशा ले के
चुप चलल कलक्टर कारा पर

थर, थर, थर काँपत गात चलल
जनु डोलत पीपर पात चलल
सटि जीभि गइलि, मुँह सूखि चलल
भुइँ चूमि पाँव थहरात चलल

जइसे साहब के कार चललि
सर-सर जेहल का द्वार चललि
तइसे रन में बागी सेना
मस्ती में झारेझार चललि

आगे बागी-सरदार चलल
बलिबेदी पर तइयार चलल
पाछे नर-नाहर बीरन के
गँवई के गोल जुझार चलल

बागिन के भारी भीर चललि
जेहल के घेरा चीर चललि
सिर ऊपर उड़त तिरंगा ले
फाटक का पास अधीर चललि

बाहर बागिन के मोल रहल
भीतर नेतन के टोल रहल
दूनों का बीच हिंडोला में
बयरी दल डावाँडोल रहल

हर युवक जोश में चूर रहल
अस समर-साज भरपूर रहल
बलियाय में मानो उलटि गइल
लंदन-शासन मशहूर रहल

सगरे सरकारी शासन के
अस उखड़ल पाँव सिँहासन के
मिटि धाक गइलि, मिलि खाक गइलि
रहि गइल भरोस न राशन के

लाखन के नोटि जराइ चलल
मन मारि, हारि, पछिताइ चलल
अकुलाइ कलक्टर कारा में
नेतन के आस लगाइ चलल

झनझन लोहे के द्वार खुलल
जेहल के बंद किवार खुलल
ताला पर ताला में जकड़ल
भारत के भागि-लिलार खुलल

ले प्रानन के बरदान चलल
नेतन के सँउपि कमान चलल
करजोरि कलक्टर कारा से
जब बाहर दिया-बरान चलल

नेता दल फाटक पार भइल
बलिया में राज हमार भइल
न त रारि भइलि न त मारि भइलि
साइति ले भला सुतार भइल

सपना अस सगरी बाति भइलि
पल बीच बीति जनु राति गइलि
बलिबेदी पर बिजया रानी
ले बिजय-हार मुसुकाति गइलि

जयघोष गगन में छाइ चलल
दल बागिन के हरषाइ चलल
रिमिझिमि रस-बुँद झरत बदरा
तब स्वागत में मँडराइ चलल

बागी सेना मुँह मोरि चललि
रन जीति नगर का ओरि चललि
लंका बिजयी राघव-सेना
जनु घर का ओरि बहोरि चललि

दिन ढरल लाल असमान भइल
चिरइनि के स्वागत गान भइल
लुकवा धरती के धूआँ में
संझा के सरग पयान भइल

गधबेरि चदरिया डाल चललि
चुनि-चुनि किरिनिनि के जाल चललि
दउरलि-धउरलि बागी सेना
जउरलि तब टाउनहाल चललि

पहरा पर बिहँसति राति चललि
झिलमिल तारन के पाँति चललि
जन-जन का जोश-समुन्दर में
बागी सेना लहराति चललि

मुसुकात गगन में चान चलल
चानी के तानि बितान चलल
रसरंगनि में नाचत कूदत
बिजयी मजदूर किसान चलल

दल सरकारो छितिराइ गइल
बागिन में सिमिट समाइ गइल
धन-धाम धनी गद्दारन के
गड़बड़ में कतें लुटाइ गइल

जुटि जब सगरे सरदार गइल
सेनानी के दरबार भइल
रन-गान रुकल, जय-गान उठल
बलिया के डोंगा पार भइल

जगरम में जागलि राति रहलि
घर घर में गीति सुनाति रहलि
जगमग-जगमग हर गली-गली
दीयन के जोति सुहाति रहलि

जइसे भकसे भिनुसार भइल
दल बागिन के तइयार भइल
गड़ि गइल तिरंगा चउक बीच
बलिया के अमर इनार भइल

स्वराज्य के दर्शन

खूनी बलिबेदी सीँच सीँच
आपन अमोल लोहू उलीच
घुलि-घुलि जब तिल-तिल प्रान लुटा
गड़ि गइल तिरंगा जिला बीच

चुपचाप फिरंगी राज चलल
गोरन के शाही-साज चलल
बलिदानी का रन-आँगन में
सदियन का बाद स्वराज चलल

दहकत अँगार पर झूमि चललि
गोली गोला के चूमि चललि
सुनसान शहीद-समाधिन पर
देवी स्वतंत्रता झूमि चललि

फिनु आपन सूरुज चान भइल
ऊषा उगि गइलि बिहान भइल
बन-बारिन-बाग-बगइचन में
चहकत चिरइनि के गान भइल

बलिया नगरी रजधानी बनि
भारत के अमर कहानी बनि
मुसुकाति चललि बलखाति चललि
छन में स्वराज के रानी बनि

काँटन का राज सिंहासन पर
रन-मयदानन का घासन पर
आपन अनमोल बिधान बनल
'चित्तूपांडे' का आसन पर

बलिया के नइया पार चलल‍ि
ले के नवका पतवार चललि
मंडल-मंडल में गाँवन के
सेवक-सेना तइयार चललि

पुलिसन के कतें न काम रहल
चोरन के कतें न नाम रहल
हर गाँव-गाँव दल बागिन के
पहरा पर आठो-याम रहल

पग-पग पर पहरादार रहल
हर मंडल के सरदार रहल
गांवन-गाँवन का पंचन पर
उनका गाँवन के भार रहल

हर गाँव मिलल हर टोल मिलल
हर गली मिललि, हर गोल मिलल
हिन्दू, मुसलिम, सिख, ईसाई
भाई-भाई दिल खोल मिलल

जन-जन में प्रेम प्रतीति बढ़लि
मन-मन में पलुहलि प्रीति बढ़लि
चोरी के वापस माल भइल
कलि में सतयुग के रीति बढ़लि

जुरि-जुरि घुरि-घुरि नर-नारि चललि
झुरि-झुरि बहि सरग बयारि चललि
झलमल, झलझल, कलकल, चंचल,
उछलत नदियन के धारि चललि

अस प्रकृति-परी लहराति चललि
फल फूलन में मुसुकाति चललि
कुंजन में खेत कियारिन में
अगराति चललि रँगराति चललि

तरु-तरु में डाली डाली में
छवि झलकि चललि हरियाली में
भँवरा टोली मदमाति चललि
मधु पी-पी प्याली-प्याली में

बँसुरी बाजलि बँसवारी में
खिलि कली खुलति चिटुकारी में
स्वागत में कूकति कोइलिया
उढ़ि उमँगि चललि फुलवारी में

जल उमड़ल तालतलइय्यन के
मन उमड़ल लोग-लुगइय्यन के
जगि भागि चललि, उठि रागि चललि
दुख भागल महल-मड़इय्यन के

गाँवन में हाट बजारिनि में
नगरन में महल अटारिनि में
अनयास.हि हास, हुलास उठल
नर-नारिनि का किलकारिनि में

नीदरसोलो-सेना

भकसावन राति सिराति रहलि
ललकी लोही छितराति रहलि
उगि के ऊषा बलिबेदी पर
उदयाचल से मुसुकाति रहलि

चमगादुर, चोर परात रहल
उरुवा अकुलात लुकात रहल
चुलबुल-कुलकुल पशु-पंछिन के
बन-बागन बीच सुनात रहल

चुप चान गगन के नापि चलल
झिलमिल तारा मुँह ढाँपि चलल
रजनी रानी ले अंधकार
जब छितिज-छोर पर काँपि चलल

हर झूमत चलल बधारी में
जग जागि उठल किलकारी में
जब पवन चलल पुरवइया के
भँवरा गूँजल बन बारी में

जइसे बलिया में भोर भइल
तेऽइस अगस्त अँखिफोर भइल
गाड़ी के सीटी के 'पी पी'
तब बड़ागाँव का ओर भइल

जुटि सगरे गाँव जवार चलल
सँभ शूर चलल सरदार चलल
गुरिया, गुरदेलि, गँड़ासि, लउरि,
खुरुपा, हँसुआ हथियार चलल

बिछवा लाइन पर रेलि चललि
पग पग पर आगि उँडेलि चललि
गाड़ी रुकि-रुकि चलि-चलि धीरे
बलिया-सीमा में हेलि चललि

जब बड़ागाँव का बीच चललि
टीसन का पास नगीच चललि
तब झपटि फिरंगिन के टोली
बन्दूकि दनादन खींच चललि

गलियनि में गोरा गोल चलल
घर-घर पर धावा बोल चलल
दीया का पास फतिंगा अस
दल बागिन के अनमोल चलल

तमसा का चढ़ल जवानी में
बढ़ियाइल बीहड़ पानी में
जे दउरि दनादन कूदि पड़ल
पड़ि गइल मौत का घानी में

गोरी टोली बाजारि चललि
घर-घर के फूँकि उजारि चललि
तब ले पूरुब से बागिन के
पगलाइलि फउदि जुझारि चललि

गोली टोली पर झूमि चललि
सन-सन सीनन के चूमि चललि
गहुँअन साँपन का गेंडुरि में
बागिन के सेना जूमि चललि

रन-सागर का मँझधारि चललि
यमपुर के ताकि दुआरि चललि
गोरन का गोली-गोला के
जब मस्ती में फटकारि चललि

नर-नाहर 'बृन्दा' बीर चलल
लहरत सागर के चीर चलल
बन्दूकि दुनली खोलि-खोलि
दल गोरन के बेपीर चलल

बालक बृन्दा जय बोलि चलल
बल बयरिन के जनु तोलि चलल
बलिबेदी का अंगारन पर
छन भर में छाती खोलि चलल

रन बीच लुटावत प्रान चलल
जग बीच बढ़ावत शान चलल
गाड़ी पर गोल फिरंगिन के
लपकल बलिया हैरान चलल

❀ ❀ ❀

दल दूसर दुष्ट फिरंगिन के
लुच्चन के नीच लफंगिन के
आइल बलिया इस्टीमर से
अधिराती गंग तरंगनि से

पल बीच प्रलय के काल भइल
जनु ज्वालामुखी-उबाल भइल
दिल दहलि गइल, हिलि महल गइल
अइसन भारी भूचाल भइल

गोरा-दल रातिन रात चलल
जइसे यमदूत छ्त्रात चलल
छन में बलिया का गलियन से
उठि विपति धुआँ लहरात चलल

जाने कब कवन विधान बनल
अगुआ दल अंतरधान बनल
घर-घर नारी-नर निरपराध
बलिबेदी के बलिदान बनल

छन-छन पर बरिसति आगि चललि
जन-जन पर गोली दागि चललि
दन-दन दउरलि गोरी सेना
कोना-कोना के धाँगि चललि

धरती खूनन से पाटि चललि
मिलि गइल जहाँ जे काटि चललि
घर फूँकि चललि; धन लूटि चललि
मिलि जुलि आपस में बाँटि चललि

अस आह कराह सुनाति रहलि
'नादिरशाही' शरमाति रहलि
धरती पर उतरत काल रहल
जब जहाँ फउदि मँड़राति रहलि

सुखपूरा नीदर सोल चलल
जन जन के थरहा डोल चलल
हाथी के मारि मसखरा में
मठिया पर धावा बोल चलल

चंडी प्रसाद तरनाइ चलल
छन में रन में रिसिआइ चलल
अतताई दुनवा दूतन के
ललकारि उहाँ अठिलाइ चलल

रन बीच दहाड़त शेर चलल
रिपु-दल में डालि दरेर चलल
जनु चक्रव्यूह का चक्कर में
अभिमन्यु अकेल दिलेर चलल

आगे बन्दूकि-निसान रहल
जब काल-कवर में प्रान रहल
तब चंडी का मन में जागल
बलिया के शान गुमान रहल

रन-मद में मस्त रवानी पर
निरभीक निडर अगुआनी पर
अस नीदर सोल रिसाइ गइल
चंडी का चढ़ल जवानी पर

दगि गोली गइलि धड़ाम उहाँ
पर डर के रहल न नाम इहाँ
दन से छाती के खोलि चलल
गोरन के लागलि लाम जहाँ

चंचल चंडी बलिदान भइल
गोली के बीर निसान भइल
दुखिया भारत का चरनन में
बरबीर लुटावत प्रान गइल

❀ ❀ ❀

नरही का खूनी थाना पर
गोली 'मुक्ता' मरदाना पर
लहरति चललि, हहराति चललि
निरबल पागल परवाना पर

दन दनन 'मुक्ता' पर वार भइल
गोरन के सघल शिकार भइल
रुकि सांस गइलि, अस जानिपड़ल
जनु प्रान सरग का द्वार गइल

फिनु फेकल गइल तलइया में
पुलिया के पास कनइया में
के जाने, कइसे, प्रान कहाँ
अटकल रहि गइल नटइया में

जस जस जल के परवेश भइल
तस तस जनु दूर कलेश भइल
निरजीव देहि में प्रान परल
सुधि पलटि गइलि, दुख शेष भइल

अस अमिय ताल के नीर भइल
छन भर हटि तन के पीर गइल
घुसुकत, सरकत, धीरे, धीरे
घर घामल 'मुक्ता' बीर गइल

'खेजुरी आश्रम'

खेजुरी आश्रम अनमोल रहल
तहवाँ बागिन के गोल रहल
मंडल भर के बिटुरात जहाँ
सभ लोग रहल, सब टोल रहल

नींदर-सोली-सेना आइलि
आश्रम का ऊपर मँड़राइलि
घर फूँकि चललि, धन लूटि चललि
बन में हथिनी जस बउराइलि

एगो चिनगारी

गोरी सेना संहारि चललि
गाँवन के फूँकि उजारि चललि
कुछ मस्त जवानन के टोला
रन-सागर के ललकारि चललि

मिलि माँग भइलि हथियारन के
बन्दूकि, बरूदि, कटारन के
गाँवन गाँवन में गोल गइल
बागी-सेना - सरदारन के

पहिला दल तुर्तीपार चलल
जहँ रिपु के अस्त्रागार रहल
'भर खरा' गाँव से पुलिसन के
ले पाँच सगुन-हथियार चलल

जइसे पचीस के मोर भइल
दल दूसर 'छाता' ओर गइल
ले के दूगो बन्दूकि उहाँ
'भरसौंता' में टकटोर गइल

"भरसौंता' से अगरात चलल
दुइले बनूखि मुसुकात चलल
दल सगरे 'सोहाकुंड' दउरि
पगलाइल रातिन रात चलल

सभ 'सीहाकुंड' बजारि गइल
सुतला में छापा मारि गइल
अनजाने में रनघेरा में
जब बागिन के दल हारि गइल

अनुअन के बदलि बिचार गइल
बिखरल दल सीमा पार गइल
बिनु माथ अनाथ जिलाम सगरे
कोना कोना लाचार भइल

जइसे पचीस के मोर भइल
दल दूसर 'छाता' ओर गइल
ले के दूगो बन्दूकि उहाँ
'भरसौंता' में टकटोर गइल

'भरसौंता' से अगरात चलल
दुइले बनूखि मुसुकात चलल
दल सगरे 'सोहाकुंड' दउरि
पगलाइल रातिन रात चलल

सभ 'सीहाकुंड' बजारि गइल
सुतला में छापा मारि गइल
अनजाने में रनघेरा में
जब बागिन के दल हारि गइल

अमुअन के बदलि बिचार गइल
बिखरल दल सीमा पार गइल
बिनु माथ अनाथ जिलाम सगरे
कोना कोना लाचार भइल

काल का गाल में

खूनी सेना ललकारि चललि
ले ले बन्दूकि कटारि चललि
हर नगर-नगर, हर डगर-डगर
हर घर में छापा मारि चललि

कन-कन खूनन से लाल भइल
जन-जन जूझल बेहाल भइल
छन-छन युग अइसन जात रहल
तन-तन के जान जवाल भइल

हर गोरा बिषधर नाग भइल
हर टोला 'जलियाँ बाग' भइल
हर गाँव गाँव का गली गली
खुलि खेलल खूनी फाग गइल

डगमग डोंगा मझधार गइल
दश दिशि में हाहाकार भइल
बड़वानल शान्ति-समुन्दर में
आइल अनहोना ज्वार भइल

दुख-दारुन अस घेरा डालल
घर-घर पिशाच डेरा डालल
फन काढ़ि फफनि फुफुकारि चलल
घर के आपन पोआ पालल

पेड़न का डोलति डालनि पर
छिगुनी का छूटति छालनि पर
बइठा, बइठा संगीन भोंकि
उफ, छेद बनवलनि खालनि पर

चलनी चूतर के चाम भइल
प्रानन के मोल छदाम भइल
तिरिया, तनया, परिवार, पूत
बनि काल धरा धन, धाम गइल

दिन दूना बढ़ते पीर गइल
अन-जल बिनु सूखि शरीर गइल
दिन चयन राति में नींद कहाँ
ढरि सभ नयनन के नीर गइल

गद्दारन के दल जोरि चलल
हर गाँव-टोल हर खोरि चलल
खूनी 'नीदर-सोली-सेना'
तन-तन के चाम चचोरि चललि

बेतन से खींचल खालि गइलि
सेना के खेलि खियालि भइलि
पिसि पिसि के कटला घावन पर
छापल मरिचाई लाल गइलि

जब बेकस बेबश नारिनि के
घर बाहर खींचि बिचारिनि के
यमदूत बलें लूटे चहलनि
अनमोल लाज सुकुवारिनि के

तब प्रान लुटा विष-पानन से
गिरि ताल कुआँ अपमानन से
सत साधि सतिनि के गोल चलल
सिन्दूर बचा बलिदानन से

थाना का काल-कोठारी में
यमदंड घुसा मलद्वारी में
पड़ पड़ दंडन के मारि पड़लि
बन्दिन पर बारी बारी में

अस खोज भइल कँगरेसिन के
अस जागल जोश विदेशिन के
सिकहर पर डोलत प्रान रहल
दिन राति गरीब पड़ोसिन के

दुइ पैर हटा के दूरी पर
सिर राखि दुधारी छूरीतर
कसि अंड-कोष में बान्हि ईंट
लठ बरिसल बिना कसूरी पर

जब जब बन्दी बेहोश भइल
पानी दे दे फिनु होश भइल
तन कुचलि कुचलि मनमसलि मसलि
पाजिन के ठंढा रोस भइल

उफ, मूत्र-नली के पकड़ि पोर
रग रगड़ि रगड़ि झकझोर झोर
खेलनि में बीरज, खूनन के
जनु खेलि भइलि बरबस मरोर

तब प्रान लुटा बिष-पानन से
गिरि ताल कुआँ अपमानन से
सत साधि सतिनि के गोल चलल
सिन्दूर बचा बलिदानन से

थाना का काल-कोठारी में
यमदंड घुसा मलद्वारी में
पड़ पड़ दंडन के मारि पड़लि
बन्दिन पर बारी बारी में

अस खोज भइल कँगरेसिन के
अस जागल जोश बिदेशिन के
सिकहर पर डोलत प्रान रहल
दिन राति गरीब पड़ोसिन के

दुइ पैर हटा के दूरी पर
सिर राखि दुधारी छूरीतर
कसि अंड-कोष में बान्हि ईंट
लठ बरिसल बिना कसूरी पर

जब जब बन्दी बेहोश भइल
पानी दे दे फिनु होश भइल
तन कुचलि कुचलि मनमसलि मसलि
पाजिन के ठंढा रोस भइल

उफ, मूत्र-नली के पकडि़ पोर
रग रगड़ि रगडि़ झकझोर झोर
खेलनि में बीरज, खूनन के
जनु खेलि भइलि बरबस मरोर

नहँ नहँ में ठोकलि कील गइलि
तन में भोंकलि संगीन गइलि
गलियनि में घसिटत खूनन से
बागिन के देहि रँगीन भइलि

गद्दारन के दरबार रहल
कुछ कहल सुनल बेकार रहल
झुकि गइल न सिर जेकर ओपर
लाठी जूता बउछार रहल

जारी हर ओर 'सलाम' रहल
छन-छन में आठोयाम रहल
थाना पर शीश झुकाइ चलल
जे जे सेसर सरनाम रहल

हर गोरा दनवा-दूत भइल
गाँवन में जुलुम अकूत भइल
बूटन से छाती रँउदि रँउदि
मुहँ भीतर डालल मूत गइल

खद्दर जहरीला तार रहल
झंडा लहरात लुकार रहल
गाँधी टोपी से भड़कि जात
सगरे शाही दरबार रहल

हर गाँव सून शमशान रहल
डोकी में परल परान रहल
बिरले जन चीन्हनहार रहल
आपन बनि गइल अजान रहल

छन-छन गिन-गिन दिन जात रहल
जन-जन घर-घर घबरात रहल
भारत के बड़ बड़ नेता ले
बलिया आवत थहरात रहल

घिरि गइल घोर अन्हियार रहल
सूझत ना कतें किनार रहल
गाइनि के गोल कसाइन के
हेड़ा में परल लचार रहल

यमपुरी जेल

यमपुर बलिया के जेलि रहलि
दनवा-दूतन के खेलि रहलि
हर हाता के, हर बैरक के
जनु यम का हाथ नकेलि रहलि

बन्दिन का बेहद भीरनि में
दुइ पैर जकड़ि जंजीरनि में
खूँटा में बान्हल बयल नियर
रो राति गइलि पड़ि पीरनि में

जाड़ा सी सी सिसियाति गइलि
गरमी टिन में घिघियाति गइलि
जेहल में रोवत आठ पहर
युग-युग अइसनि बरसाति गइलि

मुँह बन्द रहल, फरियादि कहाँ
बन्दिन के रहलि मियादि कहाँ

डंडा, लाठी के, गाली के
थप्पर के रहलि तदादि कहाँ

दिन राति न सूखत लोर रहल
मझधारि न सुझत ओर रहल
बाहर भीतर दुइ दुनिया के
अन्तर जनु कोस करोर रहल

खुनियाइल कारागार रहल
पल पल में हाहाकार रहल
दुइ बित्ता धरती में बन्दी
सिकुड़ल, सपटल लाचार रहल

दुनिया सगरी फटकारि चललि
निनियो जब नयन बिसारि चललि
तब मौत सखी आपन आँचर
दुखिया प्रानन पर डारि चललि

जालिम जेलर यमराज रहल
चोरन डाकुन के राज रहल
बिनु राशन, बासन, डासन के
बन्दिन के बन्द समाज रहल

मिटि गइल शान, अभिमान रहल
रो रो के होत बिहान रहल
झलरा रोटी में आठ पहर
बन्दिन के अटकल प्रान रहल

डाक्टर छछात यमदूत रहल
बिगड़ल मसान के भूत रहल
बचि गइल जान 'हस्पीटल' में
अस के माई के पूत रहल

जब बन्दी चलल रिहाई में
तब पुलिस चललि डकुहाई में
जब जब जे फाटक पार भइल
फिनु पकड़ि चलल तनहाई में

अतवार रहल ठगहारन के
बटि बखरा में बटमारन के
बन्दिन का मौन मिलाई में
उड़ियाइल माल हजारन के

पग में बेड़ा झनकार रहलि
कर में चक्की के कार रहलि
छन में गिनिती, छन में परेड
छन में 'वाडर' के मारि रहलि

हर कदम कदम पर घूस रहल
चसकल चगाड़ चपलूस रहल
खटमल, चिल्लर के फउदि रहलि
सिर पर मँड़रात जसूस रहल

न्याय के नाटक

रचि रूप नया नटशाला में
तुनि बुनि मकरी का जाला में
चुनि चुनि बागिन पर केस चलल
दानव दरबार निराला में

नट के जनु नाटक न्याय रहल
हर ओर घोर अन्याय रहल
मन दीन रहल, तन छीन रहल
सभ थाकल बल बउसाय रहल

पोथिन में बन्द कनून रहल
जग भर बन्दिन के सून रहल
छिन दिन दुतिया का चान नियर
दुख-दारुन दूनादून रहल

डंडन से पिटल गवाह गइल
जे तनी साच का राह गइल
बनि बन्दी आप वकील चलल
जे बन्दिन ओर निगाह कइल

अस केसन के भरमारि रहलि
सेसन ले लागलि कतारि रहलि
पहरा में पुलिस कसाइन का
छन जीति रहलि, छन हारि रहलि

बस रहाल सजाइ, अपील कहाँ
हाकिम के हुकुम, दलील कहाँ
जनकारी के तइयारी के
केसन के रहलि सबील कहां

कब, कवन, कहाँ, का केस रहलि
जानल जब जेकर पेश रहलि
छूटल, जे जवन मुकदिमा में
ओह पर ऊहे केस चललि

बन्दी बनि गइल अछूत रहल
सिर पर सवार यमदूत रहल
तनिकी बन्दिन से बात करे
केकर करेज मजबूत रहल

पुलिसन के अइसन दाब रहल
जज का मुँह लागल जाब रहल
बेटो पर बाप गवाह भइल
जन जन अइसन बेताब रहल

परचा के चरचा

अस परचन के परचार रहल
घर घर नरनर लाचार रहल
दउरत पुलिसन के गोल रहल
गलियन में हाहाकार रहल

अब इहाँ गिरल, तब उहाँ गिरल
के जाने ऊ कब कहाँ गिरल

धरती पर काल छछात चलल
परचा पापी जब जहाँ गिरल

जहंवाँ एगो मिलि जात रहल
दुख के बदरा मँडरात रहल
सइ गज भीतर सगरे जन जन
थर थर डरि डरि घिघियात रहल

लगि जाति जुलुम के जालि रहलि
खुलि जाति पुलिसटकसालि रहलि
हर ओर बसंत-बहारि नि में
पुलिसन के गोटी लाल रहलि

हर पुलिस गवरनर लाट रहल
कप्तान बनल सम्राट रहल
राजा बाबू से बढ़ल इहाँ
चउकीदारन के ठाट रहल

सगरी बलिया बरबाद रहलि
कतहीं न तनी फरियाद रहलि
केहू के लूटे पाटे में
हर पुलिस इहाँ आजाद रहलि

सबहर जुलुमाना

सबहर जुलुमी जुलुमाना में
लूटल फूंकल मनमाना में
तनि गइल जिला के तार तार
अतताई ताना बाना में

जहवाँ जुलुमाना आठ भइल
बरजोरी लूटल साठ गइल
फरियाद, निहोरा, अरज, गरज
मिनती पर उलटा पाठ भइल

जुलुमाना तेरह लाख रहल
सभह् के बिगड़ल साख रहल
सगरे जुलुमाना के मियादि
कागद में एगो पाख रहल

तेरह चलि गइल खजाना में
भइगइल जमा जुलुमाना में
तेरह के तैंतिस लाख गइल
पाकट भीतर ठकुराना में

पतझड़ में बसंत

हर ओर प्रलय के काल रहल
कन-कन लोह् से लाल रहल
कुहुँकति बलिया का काया में
कोना कोना कंकाल रहल

जब भइलि दुखी बलिया बेकल
घर-घर गलिया-गलिया बेकल
मड़ई- टाटी- छप्पर- खप्पर
कुटिया- कोठी- मठिया बेकल—

घावन का छालन से बेकल
रन-लूटल लालन से बेकल
जे उछलि उछलि नर-मेध कइल
खुनियाइल भालन से बेकल—

भगिनी अपमानन से बेकल
जुलमी जुलुमानन से बेकल
छातिन पर गोला गोली के
अनगिनत निशानन से बेकल—

लाठी आ जूतन से बेकल
सभ दनवा-दूतन से बेकल
थाना का काल-कोठारिनि के
करिया-करतूतनि से बेकल—

तब नाश इहाँ निरमान बनल
बलिदान इहाँ बरदान बनल
शमशानन में मुसुकान उठलि
रनगान इहाँ जयगान बनल

उदयाचल ऊपर भोर भइल
पूरुब में अचिक अँजोर भइल
जग-रंगमंच पर अचके में
नेता सुबास के शोर भइल

रन में जब सिंह सुबास चलल
छन में उनचास बतास चलल
परबासी भारत बासिन का
घर घर में जोश हुलास चलल

तन आपन छेदि भुजाली से
लिखि लिखि लोहू का लाली से
पाती रन बीच हजारनि गो
आइलि घर से घर वाली से

दिल्ली का ओर पयान भइल
रन-चंडी के रन-गान भइल
बलिबेला में बलिबेदी पर
शुभ सगुन लहू के दान भइल

बीगुल रन बीच बजाइ चलल
भारत के विजय मनाइ चलल
'आजाद-हिन्द-सेना' लेके
ब्रम्हा रनभूमि बनाइ चलल

'जयहिन्द' अमोल अलापि चलल
सरिता-सर-सागर टापि चलल
बन बीहड़, कन्दर, खोह, गुफा,
गिरि ऊपर मारग नापि चलल

'राष्ट्रीय-धजा' लहराति चललि
'कौमी-सेना' अठिलाति चललि
बिनु दाना पानी आठ पहर
पागल अइसन दिन राति चललि

परवाह न ओढ़न, डासन के
परवाह न बासन, राशन के
बस चाह रहलि, परवाह रहलि
दिल्ली का राज-सिंहासन के

जननी पर वारल प्रान रहल
धन-धाम सभे बलिदान रहल
'कौमी सेना' का गोरन से
मचि गइल समर घमसान रहल

युग युग के पर्दा फारि चललि
रन बीच नवोढ़ा नारि चललि
'झाँसी टोली' में भारत के
विधवा, सधवा, सुकुमारि चललि

जब 'दुर्गा' ले तरुवारि चललि
जब 'काली' खींचि कटारि चललि
रन में छन्नात जब 'रुद्रानी'
नागिनि अइसनि फुफकारि चललि

झट 'काली पलटनि' झूमि चललि
मिलि बागिन में जब घूमि चललि
बिखरल रन-व्यूह बिदेशिन के
अस बदलि रंग रन-भूमि चललि

खूनी घाटी में 'इम्फल' में
अस समर भइल दूनों दल में
अँगरेजन के तब आँखिन के
खुलि गइलि पलक-पपनी पल में

रन-सागर बीच झकोर उठल
भारत में ज्वार-हिलोर उठल
जब राह न मिललि फिरंगिन के
बजि अपने संख ढपोर उठल

दुख के दिन सगरे बीत चलल
नव युग बनि आप अतीत चलल
ले संधिपत्र 'माउँऽट बेटन'
रन से सेगाँव सभीत चलल

यमपुरी जेल के द्वार खुलल
पिंजड़ा के बन्द किवार खुलल
अहमद नगरी में दनन दनन
भारत के भागि-लिलार खुलल

बन्दिन के बीर कतारि चललि
बयरिन के छाती फारि चललि
नर नाहर बीर जवाहर के
गर्जनि-तर्जनि ललकारि चललि

जइसे धरती पर पाँव पड़ल
भारत के पहिला गांव पड़ल
मुहँ से तब बीर जवाहर का
बलिया के विजयी नाँव पड़ल

स्वागत में बलिया भूमि चललि
बनि के बड़भागी भूमि चललि
सेनापति बीर जवाहिर के
दुइ कमल-चरन के चूमि चललि

करुना-क्रन्दन बनि हास चलल
बनि विकल बिनाश, विकास चलल
बलिया का खूनी बेदी पर
रचि काल नया इतिहास चलल

रन-खेतन में बलिदनन के
खूनन से सींचि जवानन के
युग युग जे बोवल बीज रहल
बलिबेदी बीच परानन के

लघु बीज भूमि में डोलि उठल
धरती धसोरि मुँह खोलि उठल
पी पी के खून शहीदन के
जी उठल अचानक बोलि उठल

अँकुर अमोल भुइँ फोरि उगल
कोमल कोंपल बरजोरि उगल
गलि-गलि घुलि-घुलि मिलि माटी में
लहलह दल नवल बहोरि उगल

फिनु राज-लछिमी लोटि चललि
बापू के चरन पलोटि चललि
आजादी का अगुआनी में
नर नारी चालिस कोटि चललि

पन्द्रह अगस्त अगराइ चलल
दिल्ली में जोति जराइ चलल
आपनि माया छाया ले के
अपने अँगरेज लुकाइ चलल

उगि ऊषा फिनु मुसुकाइ चललि
नभ में लाली छितिराइ चललि
भारत का फूस-मड़इयन में
आजाद-किरिनि लहराइ चललि

दिन में रजनी के अन्त भइल
पतझड़ में बिहँसि बसंत भइल
धरती खिलि उठलि जवानी में
जय जय में गूँजि दिगंत गइल

जयहिन्द